सद्ज्ञान ग्रन्थ माला का बाईसवां पुष्प— २२

प्रतिष्ठा का उच्च सोपान-

197
A

S;45
152H4

198
A

सत्य प्रेम न्याय

अखण्ड ज्योति
मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

—श्रीराम शर्मा आचार्य ।

S:45 3442
152H4
Sharma, SriRam.
Pratistha ka uchcha
sopan.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
S:45 (LIBRARY) 3442
152H4 JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ ॐ ॥

प्रतिष्ठा का उच्च सोपान

लेखक—

पं० श्रीराम शर्मा, आचार्य

प्रकाशकः—

"अखंड-ज्योति" कार्यालय,

मथुरा

प्रथमवार } सम्वत् २००० वि० { मूल्य ।=)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

3145
152H4

मुख मुद्रा को सम्मान पूर्ण रखिए !

साइन बोर्ड के आधार पर अपरिचित व्यक्ति यह जानता है कि इस मकान के अन्दर कौन रहता है या क्या कारोबार होता है। मुख मुद्रा एक प्रकार का साइन बोर्ड है जिससे प्रकट होता है कि इस देह के अन्दर रहने वाला कैसा है, किस प्रकार के गुण अवगुण उसमें हैं। आप में अनेक अच्छे गुण हैं तो भी यदि स्वभाव परिमार्जित न हुआ, भाव भंगी में, मुख मुद्रा में, गौरव प्रकट करने योग्य लहरें न हुईं तो नित्य जिन अपरिचित अनेक व्यक्तियों के साथ व्यवहार करते हैं उन पर कोई अच्छा प्रभाव न डाल सकेंगे। मकान के दरवाजे पर साइन बोर्ड कुछ लगा हो और भीतर काम कुछ होता है, तो खास खास परिचित व्यक्तियों को छोड़कर साधारणतः यही समझा जायगा कि इस मकान में वही काम होता है जिसका साइन बोर्ड लगा है। मदिरा का लेबिल लगी हुई बोतल में यदि गंगाजल भरा हो तो आम तौर से उसे मदिरा ही समझा जायगा। छान बीन करके बोतलमें भरी हुई वस्तुको जाननेकी सुविधा और रुचि बहुत कम लोगों को होतीहै साधारणतः उसीपर पूरा अधूरा विश्वास किया जाता है जो कुछ कि प्रकट किया जाता है। आप में जब अनेक सद्गुणों का निवास है, ईमानदारी, भलमनसाहत, सभ्यता, शिष्टाचार, वीरत्व, जैसी उत्तम वृत्तियों को अपने में जगाते भरते चले जा रहे हैं तो यह भी आवश्यक है वैसी ही मुख मुद्रा का भ्रकुटि विलास का निर्माण करें। जब आप मणि मुक्ताओं का व्यापार करते हैं तो क्या हर्ज है यदि "जौहरी की दुकान" का साइन बोर्ड भी अपने कार्यालय के दरवाजे पर लगादें इससे आपको भी लाभ होगा और पहचानने वाले को आपके बारे में जानकारी प्राप्त करने के संबंध में पहचानने वालों को इससे आसानी होगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi

पहिला पाठ

आत्म सम्मान प्राप्त कीजिए, इज्जतदार जीवन बिताइए !

"तुम कुत्ते हो" ऐसा कड़ुआ वचन यदि कोई कहे तो जिससे यह कहा गया है वह लड़ने मरने को तैयार होजायगा। इसे अपनी बेइज्जती समझेगा और बदला लेने पर तुल जायगा। किसी को "कुत्ता" कहना भारतीय विचार धारा के अनुसार एक गाली है जिसे कोई स्वाभिमानी सहन नहीं कर सकता।

क्या आपने कभी विचार किया है कि एक सीधे साधे निर्दोष जानवर की उपमा दे देने से इतनी चिढ़ क्यों उत्पन्न होती है ? कुत्ते में वैसे कोई खास बुराई नहीं मालूम होती। जो रूखा सूखा मिलजाता है उसी में सन्तोष कर लेता है, रात भर जागकर कड़ी मिहनत की चौकीदार करता है, किसी को सताता नहीं, मालिक से मुहब्बत करता है, इतने गुण होने के कारण ही लोग उसे खुशी के साथ पालते हैं, यदि अवगुण अधिक होते तो उसे कोई पास भी खड़ा न होने देता। शृगाल, भेड़िया, आदि भी कुत्ते की जाति के और उसी रंग रूप के हैं पर वे मनुष्य के लिए लाभदायक नहीं है इसलिए कोई उन्हें पालने का साहस नहीं करता। कुत्ता निस्संदेह कई उत्तम गुण रखता है तभी उसे पाला जाता है वरना व्यापार-कुशल मनुष्य उसे कभी अपने घर में स्थान न देता। इतना होने पर भी कोई खास त्रुटि उसके अन्दर मालूम पड़ती है जिसके कारण कुत्ते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से अपनी उपमा दिये जाने पर मनुष्य तिलमिला उठता है। घोड़ा, हाथी, शेर, गाय, हिरन, खरगोश आदि भी जानवर हैं और उसी पशु जाति के हैं जिसका कि कुत्ता है। किसी को घोड़ा, हाथी, शेर, गाय, हिरन, खरगोश की उपमा दी जाय तो वह इसे मनोरंजन समझकर हँसी में टाल देगा परन्तु यदि 'कुत्ता' कहा जाय तो आग बबूला हो जायगा।

जिस दोष के कारण कुत्ते को इतना नीच समझा जाता है कि उसकी तुलना अपने से होना गाली जैसा प्रतीत होता है वह दोष है—"आत्म सम्मान का अभाव।" कुत्ता रोटी के टुकड़े के लिए दुम हिलाता है, मालिक के पैर चाटता है, हजार बार अपमानित होने पर भी कुछ नहीं कहता। मनुष्य की अन्तरात्मा कहती है कि "बेइज्जती सहन करना" सबसे बड़ा असह्य आघात है। उसे कुत्ता सहन कर सकता है; मनुष्य नहीं। कहते हैं कि "तलवार का घाव भर जाता है, पर अपमान का घाव नहीं भरता।" अपमानित होने की अपेक्षा लोग प्राण दे देना अच्छा समझते हैं। ठोकर खाकर सांप जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी जैसी तुच्छ हस्ती काटखाती है, मनुष्य की स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व को बाजी लगा देता है। अपमानित करने वाले को नीचा दिखाने के लिये, विवाद करता है, मुकदमा लड़ता है, लाठी चलाता है, खून बहाता है और जो कुछ उससे होसकता है सब कुछ करता है। मानव प्रकृति सब कुछ सहन कर सकती है परन्तु अपमान का, बेइज्जती का, घूंट गलेसे नीचे नहीं उतार सकती। मनुष्य इज्जतदार प्राणी है, बेइज्जती होना उसकी आध्यात्मिक अधिकार पर कुठाराघात होना है। जिन रुपये, पैसे, घर, जमीन, जायदाद पर अपना अधिकार है उनके छिपाये जाने पर मनुष्य शक्ति भर विरोध करता है। आत्मा का मूल भूत अधिकार सम्मान है। मछली स्वच्छ पानी में जीती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहती है और आत्मा विशुद्ध सम्मान में रहना पसंद करती है। धुऐं में हमारा दम घुटता है और हम उस स्थान में रहना पसंद नहीं करते हमारा अन्तःकरण अपमान जनक स्थिति को सहन करनेके लिए कदापि प्रस्तुत नहीं होता। जिसने अपने अन्तःकरण को कुचल कुचल कर मृत प्राय बना डाला है, नित्य पद दलित कर करके अन्धा, गूंगा, बहरा बना लिया है उनकी बात हम नहीं कहते। शेष वे लोग जिनमें जरा सी भी मनुष्यत्व बाकी है बेइज्जती को पसंद न करेंगे और अप्रिय परिस्थिति का जितना विरोध कर सकेंगे करेंगे, बच सकनेका जितना प्रयत्न कर सकेंगे करेंगे। यही कारण है कि मनुष्य कुत्ते से अपनी तुलना होना पसंद नहीं करता। किसी में चाहे कितने ही गुण क्यों न हों परन्तु यदि वह अपने सम्मानकी रक्षा नहीं करता तो वह घृणित, नीच, पतित और अधम समझा जायगा। इस सचाई को मनुष्य गर्भ में से सीख कर आता है। गुरु के उपदेश शास्त्र के आदेश, को सुने बिना भी हर एक मनुष्य आत्म गौरव के सत्य सिद्धान्त को भली प्रकार जानता है। मनुष्य के अत्यन्त आवश्यक एवं सर्वोपरि गुण को जब वह कुत्ते में नहीं देखता तो उसकी तुलना कराके अपनी बेइज्जती नहीं करना चाहता। 'कुत्ता' कहने को गाली समझने का यही कारण है।

आत्म गौरव की महत्ता पहली पुस्तक में प्रकट की जा चुकी है। गौरव शालिनी आत्मा निस्संदेह सम्मान की पात्र है। सम्माननीय वस्तु को उसके अनुरूप स्थान देना उचित है। भोजन को पवित्र स्थान पर रखते हैं, पूजा की सामिग्री को रखने के लिए शुद्ध स्थान चुना जाता है, गुरुजनों को उच्च आसन देते हैं। कारण यह है कि आदरणीय, उत्तम और प्रतिष्ठित वस्तु को उच्च स्थिति में रखने की आवश्यकता सर्व विदित है। मानव शरीर में प्रतिष्ठित गौरव शालिनी आत्मा के सम्मान नीय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिस्थिति में रखने की आवश्यकता से भी हमें परिचित होना चाहिये। जीवन धारण करने की शान इसमें है कि सम्मान के साथ जिया जाय, लोगों की दृष्टि में श्रद्धा और आदर का पात्र बनकर रहा जाय।

जीवन को सम्माननीय स्थिति में रखना, सर्वोपरि सुखद अवस्था है। क्योंकि इसमें सुस्वादु और पौष्टिक आध्यात्मिक खुराक प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। सात्विक, पुष्टिकर आहार ठीक रीति से यदि प्राप्त होता जाय तो शरीर की बलवृद्धि होती है, स्फूर्ति आती है, अंग सुदृढ़ होती हैं, जीवनी शक्ति बढ़ती है और तेज बढ़ने लगता है। इसी प्रकार यदि आत्म सम्मान का सात्विक पोषण पर्याप्त मात्रामें प्राप्तहोतारहे तो मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति होती है, बुद्धि बढ़ती है, सद्गुण विकसित होते हैं। कार्य शक्ति उन्नति करती है, और बड़ी बड़ी दुर्गम बाधाओं को पार करता हुआ वह सफलता के उन्नति शिखिर पर तीव्र गति से बढ़ता जाता है।

आपने देखा होगा कि आब हवा में ऐसे तत्व होते हैं जिनका स्वास्थ्य पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। किन्हीं स्थानों का जल वायु ऐसा स्वास्थ्यकर होती है कि बीमार आदमी अच्छे होजाते हैं और अच्छों की तन्दुरुस्ती बढ़ती है। किन्हीं स्थानों की जल वायु में ऐसे तत्व होते हैं कि वहां रहने से जीवनी शक्ति घटती है और बीमार पड़जाने की आशंका बनी रहती है। समुद्र तटों पर तथा पहाड़ों पर कुछ समय के लिये बड़े लोग वायु सेवनार्थ जाया करते हैं ताकि उनका स्वास्थ्य सुधर जाय। जहां नमी और शील रहती है। वहां की तराइयों में अक्सर ज्वर जूड़ी और कै दस्त की बीमारियां फैला करती हैं। एक पंजाबी और एक बंगाली को पास पास खड़ा करके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है कि जल वायु के अन्तर का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है।

मोटी दृष्टि से देखा जाय तो स्वास्थ्य प्रद और हानिकर स्थानों के पानी का रंग रूप तथा स्वाद एक ही तरह का मालूम पड़ता है, इसी प्रकार सांस लेते समय दोनों स्थानों की हवा भी एक ही तरह की जान पड़ती है, मामूली परीक्षा करने वाला उस अन्तर को नहीं जान सकता। जबान से चख कर पानी का फर्क मालूम नहीं किया जा सकता और न नाक से सूंघ कर हवा का अन्तर प्रकट होता है। साधारण बुद्धि उस फर्क को जानने में प्रायः असमर्थ ही रहती है तो भी वह अन्तर अस्वीकार नहीं किया जा सकता। विवेक पूर्वक अन्य साधनों से परीक्षा करने पर वह अन्तर समझ में आजाता है और अन्ततः यह मान लेना पड़ता है कि उन स्थानों की जल वायु में कुछ ऐसे तत्व अदृश्य रूप से मिले हुए हैं जो तन्दुरुस्ती पर बड़ा भारी प्रभाव डालते हैं। अदृश्य और इन्द्रिय अगम्य होने पर भी उन तत्वों का होना इतना ही सत्य है जितना कि दिखाई पड़ने वाले प्रकट पदार्थों का होना।

आत्म सम्मान और आत्म तिरष्कार भी ऐसे ही दो परस्पर विरोधी जलवायु हैं जिनका मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। लोगों के हृदय में से जब किसी के लिए श्रद्धा, आदर भावना, मित्र दृष्टि, मंगल कामना, आशीर्वाणी उठती तो वह उच्च कोटि के सात्विक एवं आनंदमय तत्वों से भरपूर होती है। यह सद् भावनाऐं बिजली की लहरों की तरह आकाश के ईथर तत्व में प्रवाहित होती हुई उसी आदमी के पास जा पहुंचती हैं जिसके लिए उनका जन्म हुआ था। बन्दूक की गोली निशाने पर लगती है, छोड़ा हुआ तीर अपने लक्ष्य पर पहुंचता है। गोली और तीर तो निशाना चूक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकते हैं परन्तु शाप और वरदान की; तिरस्कार और सम्मान की; भलाई और बुराई की भावनाऐं कभी नहीं चुकतीं, जिसके लिए वे उत्पन्न हुई हैं, उसके पास निर्बाध गति से जा पहुंचती हैं। यही वह आहार है उसके आधार पर आत्मिक स्वास्थ्य घटता बढ़ता है। किसान खेत में बीज बोताहै, समय पर फसल कटती हैं और उसी अन्न से वह अपना पेट भरता है। गेहूँ बोया है, गेहूँ खाता है, मक्का बोई है तो मक्का पर निर्वाह करता है। मनुष्य संसार रूपी खेत में कर्तव्य कर्मों का बीज बोता है और उस व्यवहार के कारण जो शाप वरदान प्राप्त होते हैं उसी आहार से आत्मिक भूख बुझाताहै। यदि दूसरों के साथ बुराई की गई है तो वह मन ही मन तुम्हारे प्रति घृणा करेगा, शाप देगा, दुखी होगा और तिरष्कार के भाव उत्पन्न करेगा। यह घृणा, शाप, दुख, तिरस्कार मिलकर जब सामने आवेंगे और अपनी कमाई हुई इस फसल पर ही आत्मिक भूख बुझाने को विवश होना पड़ेगा तब यह तामसी अखाद्य और विषैला अदृश्य आहार वैसाही प्रभाव करेगा जैसा कि सीलदार तराइयों का जल वायु हानिकर असर करता है। धुऐं से भरे हुए स्थान पर सुख पूर्वक नहीं रहा जा सकता इस प्रकार यदि चारों ओर से उड़ उड़ कर शाप और तिरस्कार की भावनाऐं आती रहें तो उस अनिष्ट कर वातावरण में सांस लेते लेते एक दिन आत्मिक स्वास्थ्य नष्ट होकर मानसिक रोगों की भरमार हो जायगी।

अशान्ति, बेचैनी, झुंमलाहट, चिड़चिड़ापन, उदासी निराशा, क्षोभ, असंतोष, ग्लानि, चिन्ता, भय, आशंका यह सब "तिरस्कार" नामक मानसिक रोग के लक्षण हैं। जिसने दूसरों के साथ अनुचित व्यवहार किये हैं, दूसरे के हृदयों में अपने लिए घृणा उपजाई है और संबंधित लोगों के मन में तिरस्कार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का पात्र बना हुआ है वह कभी भी शान्त चित्त न बैठ सकेगा और न मानसिक स्वस्थता के द्वारा मिलने वाले आनन्द का उपयोग कर सकेगा। उसे उपरोक्त मानसिक विक्षोभ सदैव पीड़ित किये रहेंगे और एक क्षण के लिए भी संतोष की सांस न लेने देंगे। रोगी कभी कराहता है, कभी चिल्लाता है, कभी हड़ फूटन बताता है, कभी सिर दर्द से बेचैन होता है, उसे न रात को चैन पड़ता है न दिन को। इसी प्रकार तिरष्कार पूर्ण दुर्भावों के रोग कीट जिसपर हर घड़ी आक्रमण कर रहे हैं वह मानसिक रोगी बड़ी दुखदायी एवं दयनीय स्थिति में निर्वाह करता है। भले ही उसके पास ढेर के ढेर धन दौलत जमा हों, भले ही शानदार महल, बढ़िया वस्त्र स्वादिष्ट भोजन का उपभोग करता हो परन्तु सचमुच देखा जाय तो वह एक गरीब मजदूर से भी बुरा जीवन व्यतीत करता है। जो शान्ति दायक नींद गरीब मजदूर सोता है वह उस रोगी अमीर को नसीब नहीं होसकती। शरीर का रोगी होना जीवन का कंटक है और मन का रोगी होना जीवन का अभिशाप। जिसने अपना मानसिक स्वास्थ्य नष्ट न कर डाला समझिए कि उसने अमृत कोष को नाली में बहाकर बरबाद कर दिया।

दूसरों के मन में यदि आपके लिए आदर है, सम्मान है, सद्भाव है तो वे ऐसी शीतल, शान्ति दायक, आनंदमयी विद्युत धारा अदृश्य रूप से प्रवाहित करेंगे जो आपतक पहुंचते पहुंचते ऐसी स्वास्थ्यप्रद बन जायगी जैसी समुद्रतट एवं पर्वतीय प्रदेशों की जल वायु। जिसने किसी से अनुचित व्यवहार नहीं किया, ठगा नहीं, अनिष्ट नहीं किया, धोखा नहीं दिया वह कभी दुखी उदास और असंतुष्ट दिखाई न देगा। क्योंकि इसका अन्तःकरण जानता है कि मैंने अखाद्य नहीं खाया है, अकर्म नहीं किया है, अधर्म नहीं फैलाया है, अनर्थ नहीं बढ़ाया है। मन से, बचन से,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्म से जिसने दूसरों का हित चाहा है, स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को प्रधानता दी है। नम्रता, उदारता, प्रेम, भलमनसाहत ईमानदारी का व्यवहार करके संबंधित लोगों को संतुष्ट रखा है वह सच्चा सम्मानका पात्र है। अपनी दृष्टि में स्वयं आप सम्माननीय हैं और दूसरे लोग भी उसे वैसा ही समझेंगे जैसा कि वह वास्तव में है। कुछ लोग कुछ समय के लिए भ्रम में रह सकते हैं पर अन्त में सचाई प्रकट होती ही है भला आदमी सदैव भला रहेगा। उसे अपने आपसे और दूसरों से सच्चा सम्मान प्राप्त होगा, वह सम्मान पूर्ण वातावरण उसके मानसिक स्वास्थ्य की पुष्टि करेंगे। प्रसन्नता, संतोष, शान्ति, स्थिरता आनंद, से उसका चित्त उमंगें लेता रहेगा। यह जीवन ही उसके लिए स्वर्ग होगा भले ही वह धन दौलत की दृष्टि से गरीब बना रहे।

महात्मा इमरसन कहा करते थे कि-अपमान पूर्वक हजार वर्ष जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घड़ी भर जीना अच्छा है। सचमुच जिन्दगी का आनन्द गौरवके साथ, सम्मान के साथ, स्वाभिमान के साथ जीने में है। इस बात को भली प्रकार समझ लीजिए कि यदि आपके अन्तःकरण में सजीवता मौजूद है तो वह आत्म सम्मान की प्राप्ति के लिए सदैव लालायित रहेगा। इज्जतदार जिन्दगी बशर करना चाहेगा। और कमियों को किसी प्रकार बर्दाश्त किया जा सकता है पर जागृत हृदय इज्जत का अभाव सहन नहीं कर सकता है। यह भूख आध्यात्मिक है, स्वाभाविक है, ईश्वर दत्त है। पेट की भूख बुझाने के लिए हम उद्योग करते हैं, आत्मा की भूख बुझाने के लिए, सम्मान सम्पादन करने का प्रयत्न करना भी कर्तव्य है। इस कर्तव्य को पालन करकेही हम आत्मिक बेचैनी से छुटकारा पाकर तृप्ति लाभ कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा पाठ

ईमानदार, खरे आदमी और भले मानस बनिए !

इस जमाने में चापलूसी और कायरता बढ़गई है। खुशामदी लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए उसकी प्रशंसा के पुल बांध देते हैं जिससे मतलब निकालना होता है। कायर लोग डरते हैं, खरी बात मुँह सामने कहने में उनकी नानी मरती है। प्रभावशाली, दबंग, अमीर या बलवान के सामने उसकी खरी आलोचना करते हुए कायरों का दिल धड़कने लगता है, पैर कांपने लगते हैं, इसलिए वे अपनी खैर इसी में समझते हैं कि चुप रहें और समयको टाल दें। तीसरे लोग घोर स्वार्थी दर्जे के होते हैं, खुद उनके ऊपर कुछ बीते तो भले ही चें में करें पर यदि उनके पड़ौसी मित्र या भाई पर कुछ अन्याय होता हो तो "कौन झगड़े में पड़े" या "हमें अपने मतलबसे मतलब" कहकर चुप हो रहते हैं। इस जमाने में उपरोक्त तीन तरह के लोगों की अधिकता है। जो बुराई का सेहरा अपने सिर पर ओढ़ने को तैयार हों, झगड़े से न डरतेहों, सताये हुए लोगों का निस्वार्थ भाव से पक्ष लेते हों, अनुचित काम करने वाले की खरी समालोचना करने का जिनमें साहस हो, ऐसे वीर पुरुषों का प्रायः अभाव ही होगया। चापलूसी, कायरता और खुदगर्जी की अतिशय वृद्धि होजाने के कारण अनुचित काम करने वालों को समालोचना, या विरोधका बहुत कम सामना करना पड़ताहै। यदि एक आदमी ने कुछ कहा सुना भी तो अन्याय करने वाले के दस गुर्गे उसके होते हैं और उसका मुँह बन्द कर देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह ठीक है कि अनुचित काम करने वाले बेईमान लोग अपना काम मजे में चलाते रहते हैं उन्हें विरोध का बहुत थोड़ा सामना करना पड़ता है और पैसे के बल पर बहुत से सहायक मिल जाते हैं। इन सब बातों को रोज आंखों के सामने हम देखते हैं। तो भी यह स्पष्ट है कि वह बेईमान आदमी किसी की दृष्टि में इज्जतदार नहीं बन सकता। किसी के दिलमें उसके लिए श्रद्धा या सम्मान का एक कण भी नहीं होता। चापलूस अपना मतलब निकालने के लिये तारीफ करता है, कायर डरके मारे कुछ नहीं कहता, खुदगर्ज को अन्धा अपाहिज समझिए उसे अपने सिवाय और कुछ दिखाई नहीं पड़ता, कसाई के कुत्ते रोटी के टुकड़े के लिए पक्ष लेते हैं, चोर चोर मौसेरे भाई इस लिए अन्यायी की हिमायत लेते हैं कि कल यह मेरी हिमायत लेकर बदला चुका देगा। यह सब क्रम चलता है परन्तु इनका दिल टटोला जाय तो सबके मन में घृणा विराज रही होगी। मतलब की गुटबन्दी भले ही बने रहे पर भीतर ही भीतर दिल फटे रहते हैं। हर आदमी विवेक और विचार रखताहै, ईश्वरने सबको बुद्धि दी है सब जानतेहैं कि यह अनर्थ हो रहाहै, अनर्थ समर्थक का भी अन्तःकरण उससे घृणा करता है। काम को कोई स्वार्थ वश करता भले रहे और जबान से उसका समर्थन भले करता रहे पर उसका हृदय उसे बुरा ही समझेगा और बुरे कर्म से घृणा करनेकी जो आध्यात्मिक प्रवृत्ति है वह अपना काम करती रहेगी, यही कारण है कि बदमाशों के गिरोह अधिक दिन नहीं चलते उनमें भीतरी फूट पड़ जाती है और वह गुट छिन्न भिन्न हो जाता है। उद्देश्य सचाई और कर्तव्य के लिए काम करने वाले साथी एक दूसरे के लिये प्राण निछावर कर सकते हैं अपने सर्वस्व की बाजी लगा सकते हैं परन्तु बदमाशों का गुट जरा से आघात में छिन्न भिन्न होजाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुचित आचरण करने वाले के संगी, साथी, कुटुम्बी, स्त्री, पुत्र तक मन में उससे घृणा करते हैं। परिचित लोग तो और भी अधिक घृणा करते हैं। जिसको सताया गया है, ठगा गया है, वह तो अत्यंत तिरष्कारके भाव उगलेगा। इस तरह अदृश्य लोक में चारों ओर से तिरस्कार अनादर और दुर्भाव उसके ऊपर उड़ उड़ कर जमा होते जाते हैं। जैसे रेतीले प्रदेश की आंधी में पड़कर वस्त्र रहित पथिक घबराताहै। आंख, नाक, मुँह में धूलि के अम्बार प्रबल वेग से धँस कर बेचैन करते हैं वैसे ही चारों ओर से उड़ उड़ कर आने वाली दुर्भावनाऐं उसे व्यथित करती हैं और अर्ध विक्षिप्त की तरह वह परेशानी में डूबता उतराता रहता है। बेईमानी गुप्त रूप से की जाय तो भी अपनी खुद की आत्मा धिक्कारने को मौजूद है। करने वाले का नाम भले ही छिपा रहे पर बेईमानी का कार्य अधिक समयतक छिपा नहीं रहता। सताया हुए व्यक्ति का दिमाग भले ही यह न जान पावे कि किसने मेरे साथ अनर्थ किया है पर उसके मनमें से जो हाय, घृणा, शापवाणी निकलती है वह लक्ष वेधी वाण की तरह सीधी उसी के ऊपर टूट पड़ती है जिसने प्रकट रूप से या गुप्त रूप से वह कुकृत्य किया था। तात्पर्य यह है कि कितनी भी होशियारी से, चालाकी से, सफाई से, गुप्त रूप से बेईमानी की जाय वह करने वाले के लिए अदृश्य रूप से घातक और दुखदायी परिणाम लाती है। अधर्मी मनुष्य चाहे वह कितना ही चतुर क्यों न हो आत्म सम्मान का स्वर्गीय, तृप्ति-दायक आहार प्राप्त नहीं कर सकता। वह सोना जमा कर सकता है, पर जीवन फल प्राप्त नहीं कर सकता। बेईमानी से जमा की हुई सम्पत्ति ऐसी है जैसी मृग के लिए कस्तूरी। माना कि कस्तूरी बहुमूल्य है पर जिस दिन से मृग के शरीर में पड़ती है उसी दिन से उस गरीब का सोना छूट जाता है, विश्राम बन्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होजाता है। भूख प्यास की चिन्ता छोड़कर हर घड़ी अनिश्चि गति से चारों ओर भागता फिरता है। यह कस्तूरी मृग किसी काम में नहीं आती; उलटी शिकारियों द्वारा बध करा की कारण बन जाती है। वह सम्पदा किस कामकी जो कस्तू की तरह दुखदायी हो।

आत्म सम्मान को प्राप्त करने और उसे सुरक्षित र का एक ही मार्ग है वह यह कि "ईमानदारी" को जीवन सर्वोपरि नीति बना लिया जाय। आप जो भी काम करें उ सचाई की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए। लोगोंको जैसा विश्व दिलाते हैं उस विश्वास की रक्षा कीजिए। विश्वासघात, द बाजी, बचन पलटना, कुछ कहना, और कुछ करना, मानव का सबसे बड़ा पातक है। आजकल वचन पलटना एक फै सा बनता जा रहा है, इसे हल्के दर्जे का पाप समझा जाता पर वस्तुतः अपने वचन को पालन न करना, जो विश्व दिलाया है उसे पूरा न करना, बहुत ही भयानक, आत्मघा सामाजिक पाप है। धर्म आचरण की अ आ इ ई, वचन पा से आरंभ होती है। यह प्रथम सीढ़ी है जिसपर पैर रखकर कोई मनुष्य धर्म की ओर, आध्यात्मिकता की ओर, उच्चता ओर, ईश्वर की ओर, बढ़ सकता है।

अपने बारे में जबान से कहकर या बिना जबान से किसी अन्य प्रकार जो कुछ दूसरों को विश्वास दिलाते शक्ति भर उसे पूरा करने का प्रयत्न कीजिए। यह मनुष्यता प्रथम लक्षण है। जिसमें यह गुण नहीं वह सच्चे अर्थों मनुष्य नहीं कहा जा सकता और न उसे यह सम्मान प्राप्त सकता जो कि एक मनुष्य को होना चाहिए। आप जो कारोबार करें उसमें ईमानदारी की अधिक से अधिक रखें, इससे अपने सम्मान की वृद्धि होगी और कारोबार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चलेगा। उन कमीनी अकल के लोगों को क्या कहा जाय-जो भाट सा मुंह फाड़ कर यह कह दिया करते हैं कि "व्यापार में बेईमानी बिना काम नहीं चलता, ईमानदारी से रहने में गुजारा नहीं हो सकता।" असल में ऐसा कहने वाले ओछी बुद्धि के, ना समझ और विवेक बुद्धि से सर्वथा रहित होते हैं। भला बेईमानी भी व्यापार का कोई जरिया है। यह तो वह कुकर्म है जिसके लिए दफा ४२० के अनुसार सात साल तक के लिये जेलखाने में चक्की पीसनी पड़ती है, सरे बाजार जूते पड़ते हैं, और इतनी बदनामी मिलती है जिसके कारण कोई भला आदमी उसे अपने पास नहीं बैठने देता, जो कारोबार ऐसी ओछी नीति के ऊपर खड़ा हुआ है वह बालू के महल की तरह बहुत शीघ्र ढह जाता है।

जो समझते हैं कि हमने बेईमानी से पैसा कमाया है। वे गलत समझते हैं, असल में उन्होंने ईमानदारी की ओट लेकर ही अनुचित लाभ उठाया होता है। कोई व्यक्ति साफ साफ यह घोषणा करदे कि "मैं बेईमान हूँ और धोखेबाजी का कारोबार करता हूँ" तब फिर अपने व्यापार में लाभ करके दिखावे तो यह समझा जा सकता है कि-हां बेईमानी भी कोई लाभदायक नीति है। यदि ईमानदारी की आड़ लेकर, बार बार सचाई की दुहाई देकर भी यदि अनुचित रूप से कमा लिया तो वह ईमानदारी को ही निचोड़ लेना हुआ। यह क्रम तभी तक चलता रह सकता है जब तक कि पर्दा फाश नहीं होता, जिस दिन यह प्रकट होजायगा कि भल मनसाहत की आड़ में बदमाशी हो रही है उस दिन उस कालनेमी माया का अन्त ही समझिए।

आप हुजूरे मत बनिए, ओछे मत बनिये, कमीने मत बनिए। प्रतिष्ठित हूजिये और अपने लिए प्रतिष्ठा की भावनाऐं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फंसने दीजिए। यह सब होना ईमानदारी पर निर्भर है। आ छोटा काम करते हुँ कुछ हर्ज नहीं। कम पूंजी का, कम ला का, अधिक परिश्रम का, गरीबी सूचक काम काज करने कोई बुराई नहीं है। जो भी काम आपके हाथ में है उसी अपना गौरव प्रकट होने दीजिए। यदि आप दुकानदार हैं पूरा तोलिये, नियत कीमत रखिए, जो चीज जैसी है उसे वैसीही कह कर बेचिए। इन तीन नियमों पर अपने काम को अव लम्बित कर दीजिए। मत डरिए कि ऐसा करने से हानि होगी, हम कहते हैं कि कुछ ही दिनों में आपका काम आशातीत उन्नति करने लगेगा। कम तोलकर या कीमत ठहराने में अपना और ग्राहक का बहुत सा समय बर्बाद करके जो लाभ कमाया जाता है असल में वह हानि के बराबर है। कम तोलने में जो जल्दबाजी की जाती है उसे ग्राहक भांप लेता है, बालक और पागल भले ही उस चालाकी को न समझ पावें, समझदार आदमी के मन में उस जल्दबाजी के कारण संदेह अवश्य उत्पन्न होता है। भले ही वह किसी वजह से मुँह से कुछ न कहे पर भीतर ही भीतर गुनगुनाने जरूर लगेगा। उस बार तो माल ले जायगा पर दूसरी बार फिर आने में बहुत हिच मिच करेगा ग्राहक मुँह से चुप है तो यह न समझना चाहिए कि उसका मन भी चुप है। दुकानदार के प्रति ग्राहक के मन में संदेह उत्पन्न हुआ तो समझ लीजिये कि उसके दुबारा आने की तीन चौथाई आशा चली गई। इसी प्रकार मोल भाव करने में यदि बहुत मगज पची की गई है, पहिली बार मांगे गये दामों को घटाया गया है तो उस समय भले ही वह ग्राहक पट जाय पर मन में यही धक पक करता रहेगा कि कहीं इसमें भी अधिक दाम तो नहीं चले गये हैं ? ठग तो नहीं लिया गया हूँ ? क्योंकि बार बार दामों का घटाया जाना यह साबित करता है कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुकानदार झूठा और ठग है। ग्राहक सोचता है कि यदि इसकी बात पर विश्वास करके पहली बार मांगे हुए दाम दे दिये होते तो मैं बुरी तरह ठग गया होता। भले ही वह बाजार भाव से कुछ सस्ते दाम पर माल खरीद लेचला हो पर संदेह यही करता रहेगा कि कहीं इस झूठे आदमी ने इसमें भी तो नहीं ठग लिया? ऐसे संकल्प-विकल्प, शंका-संदेह लेकर जो ग्राहक गया है उसके दुबारा आने की आशा कौन कर सकता है? जिस दुकानदार के स्थायी और विश्वासी ग्राहक नहीं बना उसका काम कितने दिन चल सकता है? लूट खसोट करना तो चोर डाकुओं का काम है, दुकानदार उस नीति को अपना का अपने कारोबार का विस्तृत और दृढ़ नहीं बन सकता।

कुछ बताकर कुछ चीज देना एक बड़ा ही छुद्रापन है जिससे सारी प्रतिष्ठा धूलि में मिल जाती हैं। दूध में पानी, घी में वेजीटेबिल, अनाज में कंकड़, आटे में मिट्टी मिलाकर देना आजकल खूब चलता है, असली कहकर नकली और खराब चीजें बेची जाती हैं। खाद्य पदार्थों और औषधियों तक की प्रामाणिकता नष्ट होगई है। मनमाने दाम वसूल करना और नकली चीजें देना यह बहुत बड़ी धोखा धड़ी है। अच्छी चीज को ऊँचे दाम पर बेचना चाहिए, यह अप डर झूठा है कि अच्छी चीज महंगे दाम पर न बिकेगी। यदि यह प्रमाणित किया जा सके कि वस्तु असली है तो ग्राहक उसको कुछ अधिक पैसे देकर भी खरीद सकता है। विदेशों में जिन व्यापारियों ने व्यापार का असली मर्म समझा है उन्होंने पूरा तोलने, एक दाम रखने और जो वस्तु जैसी है उसे वैसी ही बताने की अपनी नीति बनाई है। और अपने कारोबार को सुविस्तृत करके पर्याप्त लाभ उठाया है। सदियों की पराधीनता ने हमारे चरित्र बल को नष्ट कर डाला है तदनुसार हमारे कारोबार झूठे, नकली, दगाफरेब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से भरे हुए, होने लगे हैं। लुच्चेपनसे न तो बड़े पैमानेपर लाभ ही उठाया जा सकता और न प्रतिष्ठा ही प्राप्त की जा सकती है। व्यापार में धोखेबाजी की नीति बहुत ही बुरी नीति है। इस क्षेत्र में कायरों और कमीने स्वभाव के लोगों के घुस पड़ने के कारण भारतीय उद्योग धंधे, व्यापार नष्ट होगये। इस देश में प्रचुर परिणाम में शहद उत्पन्न होता है, पर जिसे प्रमाणिक शहद की जरूरत है वह यूरोप और अमेरिका से आया हुआ शहद कैमिस्ट की दुकान से जाकर खरीदेगा। घी इस देश में पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होता है पर अविश्वास के कारण लोग रूखा सूखा खाना या वेजीटेबिल प्रयोग करना पसंद करते हैं। हमारे व्यापारिक चरित्र का यह कैसा शर्मनाक पतन है।

यही बात श्रमजीवी क्षेत्र में चल रही है। दैनिक वेतन ठहरा कर मजदूर बुलाइए तो आठ घंटे में पांच घंटे की बराबर काम करेंगे। ठेके पर काम दे दीजिये तो चार दिन का काम एक दिन में बड़ी जल्द बाजी से करके रख देंगे। अपने लिए अनुचित लाभ कमाने की खातिर दूसरे का काम बिगाड़ कर रखदेने की उन्हें जरा भी परवा न होगी। आधे मन से, आधे परिश्रम से, आधी जिम्मेदारी से, कामकरने वाले श्रमजीवी अधिक दिखाई पड़ते हैं। ऐसे लोगों के लिए काम कराने वालों के मन में भला क्या आदर हो सकता है ? उन्हें काहिल, कामचोर, निकम्मा और हरामी समझा जाता है। लेने को तो वे अपनी मजदूरी के पैसे ले ही जाते हैं पर काम कराने वालों के आदर और सहयोग से वंचित रह जाते हैं। मानव प्राणी में दैवी अंश प्रचुर मात्रा में भरा हुआ है, यदि कमजोर आर्थिक स्थिति वाले श्रमजीवी; अपनी सचाई के द्वारा काम कराने वाले के मन में अपने लिये थोड़ा सा स्थान प्राप्त करलें तो उनका प्रेम और सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं। उस प्रेम तथा सहयोग के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधार पर अधिक लाभदायक स्थिति के अवसर भी प्राप्त हो ही सकते हैं। हमें ऐसे अनेक उदाहरण मालूम हैं जिनमें अपनी ईमानदारी से मजदूर ने काम कराने वाले के दिल में स्थान प्राप्त किया और फिर उनके सहयोग से बहुत उन्नत अवस्था को पहुंच गये। अदूरदर्शी मजूर इन बातों को नहीं समझता, वह हराम-खोरी से मेहनत बचाकर, चोरी से पैसा बचाकर, गैर जिम्मेदारी से बुद्धि का खर्च बचाकर कुछ आसानी और आराम अनुभव करता है पर वह नहीं जानता कि इसके बदले में कितनी हानि कर रहा हूँ।

धर्म प्रचारक, उपदेशक, ब्राह्मण, लेखक, कवि, नेता, साधु संत, वकील, डाक्टर, शासक आदि बुद्धि जीवी श्रेणी के लोगों का उत्तर दायित्व सबसे महान है। मस्तिष्क की शक्ति से मनुष्य का जीवन सुव्यवस्थित रूप से चलता है और बुद्धि जीवियों की प्रेरणा से समाज की व्यवस्था बनती है पागल और विक्षिप्त मनुष्य का जीवन क्रम बेसिलसिले हो जाता है इसी प्रकार जिस देश के बुद्धि जीवी लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग ईमानदारी के साथ करना छोड़ देते हैं वह देश जाति सब प्रकार दीन हीन और नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। योरोप अमेरिका आदि देशों के निवासियों की व्यक्तिगत विशेषतायें ऐसी नहीं है कि वे इतने ऐश आराम भोगते। उन देशों के बुद्धि जीवी लोगों ने अपने मस्तिष्कों का उपयोग अपने निजी स्वार्थ तक ही सीमित न रक्खा बल्कि उसकी शक्ति से जो काम हो सकते थे उनका लाभ अपने देश वासियों को उदारता पूर्वक बांट दिया। मुगल सम्राट की लड़की को चिकित्सा करके अच्छा कर देने के उपरान्त अंग्रेजी अधिकारी ने यह इनाम मांगा कि मेरे देश से आने वाले माल पर चुंगी न ली जाय। वह चाहता तो अपने निज के लिए बहुत दौलत मांग कर स्वयं मालदार बन सकता था

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर उसने ऐसा नहीं किया। वैज्ञानिकों ने जीवन भर खोज करके बड़े बड़े अन्वेषण किये हैं, आविष्कारों को प्रकट कियाहै, महत्व पूर्ण यंत्र बनाये हैं, यदि वे लोग चाहते तो उन खोजों के आधारपर खुद मालामाल बनसकतेथे पर क्या उन्होंने ऐसा किया? उन लोगों ने अपने सम्पूर्ण बुद्धि कौशल का लाभ अपने देश वासियों को उठाने दिया तदनुसार वे देश लक्ष्मी के, आरोग्य के, विद्या के, ऐश आराम के भंडार बने हुए हैं, जल थल और आकाश के एक बड़े भाग पर शासन कर रहे हैं।

बुद्धि तत्व दैवी विभूतियों में एक उच्च कोटि का वरदान है। इसका उपयोग अधिक से अधिक ईमानदारी से होना चाहिए। श्रम और व्यापार के दुरुपयोग से जो हानि होती है वह सीमित हैं क्योंकि उनका दायरा छोटा और शक्ति स्वल्प है। परन्तु बुद्धि तो गैस या बारूद की तरह है। सदुपयोगसे बलवान शत्रु को आसानी से इनके द्वारा मार भगाया जा सकता है और यदि दुरुपयोग किया जाय तो अपना सर्वनाश होने में भी कुछ देर नहीं लगेगी। नादानी से गैस या बारूद के गोदाम को भड़का दिया जाय तो क्षण भर में विभ्राट् उपस्थित हो जायगा। मस्तिष्क से निकलने वाली बिजली बहुत ही सावधानी और सतर्कता से बरती जानी चाहिए अन्तथा असंख्य जन समूह के भाग्य पर उसका घातक प्रभाव हो सकता। जो ब्राह्मण आत्म विश्वास की जगह अन्ध विश्वास फैलाते हैं, जो वकील न्याय बुद्धि के स्थान पर झूंठी मुकदमे बाजी खड़ी कराते हैं, जो डाक्टर प्राकृतिक नियमों पर चलने का उपदेश न देकर दवाओं की गुलामी सिखाते हैं, जो लेखक विकारों को भड़काने वाली निकृष्ट रचनाएं रचते हैं, जो कवि मातृ जाति को अपमानित करने वाले निर्लज्ज गीत गाते हैं, जो पत्रक कलहकारी प्रचार करते हैं, जो नेता अनुयायियों को उल्लू बनाते हैं, जो साधु संत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

योग का सच्चा मर्म प्रकट करने के अपेक्षा अपने को और दूसरों को भ्रम में डालते हैं। जो शासक प्रजा की उन्नति सुरक्षा करने के स्थान पर लूट खसोट पर उतर आते हैं, जो पथ प्रदर्शक अनजानों को गुमराह करते हैं वे अपने बुद्धि व्यवसाय में भयंकर बेईमानी करते हैं। इस बेईमानी के कारण वे कुछ समय के लिए ऐश आराम के साधन इकट्ठे कर सकते हैं पर जनता जनार्दन के साथ वे ऐसा अपराध करते हैं जिसकी तुलना और किसी पातक से नहीं हो सकती। बुद्धि का दुरुपयोग करके लोगों को उलटे मार्ग पर भटका देना परले दर्जे का शैतानी कर्म हैं ऐसे लोगों के लिए भारतीय धर्म वेत्ताओं ने 'ब्रह्म राक्षस' शब्द का प्रयोग किया है।

दुनियां में प्रमुखतः तीन ही वर्ण हैं। चौथे वर्ण को हम इस लिए छोड़ देते हैं कि उनकी मनुष्यता अभी बहुत अधूरी है। उन तक पुस्तकों का और उपदेशों का प्रभाव नहीं पहुंच सकता। बुद्धि जीवी-ब्राह्मण, श्रमजीवी–क्षत्रिय, व्यापार जीवी-वैश्य, यह तीन श्रेणियां ही बुद्धि संस्कारयुक्त होने के कारण द्विज कहलाती हैं। शूद्र शब्द करीब करीब पशुत्व का बोधक है। जो लोग विचार, बुद्धि, ज्ञान, एवं अन्तःकरण की दृष्टि से पशु हैं उन्हींके लिए शूद्र शब्द काममें लाया गया है। यह लोग अध्यात्म ज्ञान को समझने में असमर्थ हैं, लोभ और भय ही इनका पथ प्रदर्शक करता है। चूंकि शूद्र लोग अध्यात्म ज्ञान को समझने में असमर्थ हैं इस लिए उन्हें इसका अनधिकारी ठहराया गया है। शूद्रों को छोड़कर हमारा हर एक द्विज से अनुरोध है कि वे अपने जीवन व्यवसाय में—बुद्धि, श्रम, व्यापार में—ईमानदारी बरतें। अपने व्यवहार को ऐसा रखें जिससे जन समाज के सामने सिर ऊँचा उठाकर यह कहा जा सके कि "मैं मनुष्य हूं—मैं मनुष्यता को कलंकित नहीं करता—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं मनुष्यता का गौरव जानता हूं और उसे तिरष्कृत नहीं।"

आत्म सम्मानका राज पथ यही है कि कारोबारमें आ
रण में प्रमाणिकता रखिए। बुद्धि जीवी हैं तो अपने ज्ञान
अपने लिए और दूसरों के लिए ऐसा प्रयोग करिए जिससे
भ्रष्टता, अनीति, छल, कपट, दुराव, शोषण, भ्रम, अज्ञान,
अशान्ति की वृद्धि न हो। बुद्धि को पवित्र तत्व समझिये
उसे धर्म के साथ ही प्रयुक्त होने दीजिए। वेश्या अपने शरीर
एक भाग का अनुचित उपयोग होने देती है इस लिये उसे ति
ष्कृत एवं घृणित ठहराया है, बुद्धि को व्यभिचारिणी होने
वेश्यावृत्ति से असंख्य गुना घृणित एवं पाप पूर्ण है। सच
से, अन्तःकरण को साक्षी देकर जो बात आप जिस प्रकार ठी
समझते हैं उसे उसी प्रकार प्रकट करिये।
से आपकी आमदनी कदापि कम नहीं होगी। अनीति का पै
चोरों के घर, वकीलों के घर, डाक्टरों के घर, कलार के घ
वेश्या के घर, चला जाता है मुफ्त खोरे उसे खाते उड़ाते
अपने लिये वह क्लेश ही छोड़ता है, धर्म पूर्वक यदि कम पै
कमाया गया है तो विश्वास रखिये वह आपके काम आवेगा
आपके आनन्द की वृद्धि का साधन होगा।

यदि आप श्रमजीवी हैं तो खरा काम कीजिये, जितना सम
निश्चित है उसमें से एक मिनट भी कम करने का प्रयत्न म
कीजिये, जो काम आपको करने के लिये दिया गया है उ
बेगार की तरह मत टालिये वरन् सारी दिलचस्पी, योग्यता औ
मिहनत के साथ इस तरह कीजिये मानो अपना निजी काम है
आपकी सुरुचि, कला बुद्धिमानी और महत्ता का वह कार्य प्रति
बिम्ब होना चाहिये। धूलि पर बने हुये पैरों के निशानों को दे
कर यह पहचान लिया जा सकता है कि इस रास्ते कुत्ता गया
या घोड़ा। काम को देखकर यह जान लिया जाता है कि इसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने वाला किस आचरण का है उसकी मनोवृत्तियाँ मनुष्यता युक्त हैं या कमीनी। खराब या कम काम करने पर भी मजदूरी तो संभवतः आपको मिल जायगी पर जो काम आपने किया है वह चिरकाल तक एक विश्वासनीय गवाह की तरह खड़ा हुआ दिन रात यह घोषणा करता रहेगा कि "मुझे कमीने हाथों से बनाया गया है।" यह बड़ा ही लज्जास्पद और डूब मरने की बात है। माना कि आपको उसमें कम मजदूरी मिली है, मालिक का स्वभाव अच्छा नहीं है, यह दोष दूसरों के हैं, इनका दंड आप अपने को क्यों दें ? अपनी प्रतिष्ठा क्यों खोवें ? अपने को फूहड़, नालायक, या हरामखोर क्यों साबित करें ? काम खराब करने से तो आपका पक्ष और भी कमजोर होता है और यह साबित होता है कि ऐसे नालायक को तो और भी कम मजदूरी मिलनी चाहिये थी, इसके साथ तो और भी खराब व्यवहार होना चाहिये था। अपने लिये ऐसी धारणाऐं फैलने देना भला कौन स्वाभिमानी श्रम जीवी पसंद करेगा ?

प्रमाणिकता के साथ व्यापार करना एक प्रकार के यज्ञ के समान है। इसमें निजी लाभ भी है और दूसरोंका लाभ भी। व्यापारी को मुनाफा मिल जाता है और ग्राहक को संतोषजनक वस्तु। दोनों ही प्रसन्न रहते हैं और आगे के लिये दोनों का मन मिला रहता है। प्रशंसा और आदर भाव का द्वार खुला रहता है सो अलग। किसी ग्राहक से एक दिन अनुचित लाभ लेकर बहुत सा मुनाफा ले लेने की अपेक्षा, व्यापारी को इसमें अधिक लाभ है कि उचित रीति थोड़ा लाभ ले। अधिक ठगा हुआ ग्राहक एक दो बार से अधिक न आवेगा किन्तु थोड़ा लाभ लेने पर वह बार बार आवेगा, चिरकाल तक सम्बन्ध रखेगा और नये ग्राहक लावेगा। हिसाब लगा कर देख लीजिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्ततः वही व्यापारी अधिक लाभ में रहेगा जो थोड़ा मुनाफा

लेता है, पूरा तोल कर देता है और कुछ कहकर कुछ वस्तु नहीं भेड़ता।

आप न्याय परायण बुद्धि जीवी बनिए, आप खरी मजूरी करने वाले श्रमजीवी बनिए, आप ईमानदार व्यापारी बनिए। क्योंकि इसी में सब दृष्टि से लाभ रहेगा। पैसे की दृष्टि से नफे में रहेगा, समाज में आपको ऊँची निगाह से देखा जायगा ख्याति बढेगी, प्रतिष्ठा प्राप्त होगी झंझटों से बचेंगे और सब से बड़ा लाभ यह होगा कि आपका अन्तःकरण शान्ति और स्वस्थता अनुभव करेगा। आदर और प्रतिष्ठा युक्त आशीर्वाणी, मलयाचल की शीतल सुगंधित वायु की तरह आपके चारों ओर प्रवाहित होगी; जिसके दिव्य प्रभाव से रोम रोम में उल्लास भर जावेगा।

प्रतिष्ठा, सम्मान, आदर और इज्जतका जीवन ही जीवन है। आप जो कुछ भी काम करते हैं उसको ईमानदारी और प्रामाणिकता से भर दीजिये। खरे बनिये, खरा काम कीजिये, खरी बात कहिये। इससे आपका हृदय हलका रहेगा और निर्भयता अनुभव करेगा। ईमानदार, खरा आदमी, भला मानस यह तीन उपाधि यदि आपको जनता के अन्तस्थल से मिलती हैं तो समझ लीजिये कि आपने जीवन फल प्राप्त कर लिया, स्वर्ग का राज्य अपनी मुट्ठी में ले लिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीसरा पाठ

आबरू की रक्षा के लिए वीरोचित कार्य का अवलम्ब न कीजिए !

मूल्यवान् वस्तुओं को पास रखने पर उनकी रक्षा की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है। घर में धन रखा हो तो उसकी हिफाजत के लिए तिजोरी की व्यवस्था करनी पड़ती है। चौकीदार, पहरेवाले रखने पड़ते हैं। चोर डाकुओं से बचने का उपाय करना पड़ता है, आपड़े तो उनका मुकाबिला करने के लिए भी तैयार रहना होता है। यह सब जिम्मेदारी धन के साथ ही हैं यदि धन न हो तो इनमें से एक भी बात की चिन्ता नहीं होती। मनुष्य के लिए आत्म गौरव और आत्म सम्मान ऐसी ही धन राशि हैं उनकी रक्षा के लिए कुछ व्यवस्था करनी पड़ती है, कुछ जिम्मेदारी उठानी होती है। स्वाभिमान से हीन व्यक्ति अपमान जनक स्थिति में पड़ा रह सकता है, पग पग पर पद दलित और तिरष्कृत होना पसंद कर सकता है। झूठन खा सकता है, भीख मांग सकता है, रोटी के टुकड़े के लिए कुत्ते की तरह दुम हिला सकता है पर जिसका आत्माभिमान जीवित है, उससे यह सब किसी भी प्रकार न होसकेगा। हलवाइयों की दुकानों के आस पास कुछ कंगले बैठे रहते हैं, खाने वाले ने पत्तल दौने फैंके कि उनसे चिपटी हुई झूठन को चाटने के लिए वे लोग लपके, कभी कभी तो इसके लिए वे आपस में लड़ झगड़ भी पड़ते हैं। विवाह, मृत भोज आदि की दावतों का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समाचार सुनकर कुछ मनुष्य दरवाजे पर आ बैठते हैं और झू
भोजन मांगने के लिए बुरी तरह दांत घिसते हैं। दुत्कारे जा
हैं, गालियां खाते हैं, तब कुछ पाते हैं अन्यथा खाली हाथों लौ
आते हैं। यह मनुष्यता को कलंकित करने वाली स्थिति है
झूठन खाकर पेट भरने की अपेक्षा, घास पात खाकर रहना
अच्छा है। सतीत्व बेचकर उदर पूर्ति करने की अपेक्षा उपवा
कर लेना अच्छा है।

जिसने मनुष्यता का मूल्य और गौरव नहीं समझा वह इ
प्रकार कार्यों द्वारा भी जीवन निर्वाह करता रहेगा और मन
कुछ ग्लानि न करेगा। ऐसी नौकरी करने वाले हमने देखे
जो कटु शब्द सुनते रहते हैं, गालियां खाते रहते हैं, पिटते रह
हैं पर उस नौकरी को नहीं छोड़ते। उस नौकरी में कोई ब
भारी लाभ हो सो बात नहीं और न यही बात है कि उन्हें वैस
नौकरी दूसरी जगह न मिलेगी। बल्कि यह कारण है कि उनक
दिल इतना कायर और मलीन होगया है कि प्रति दिन ठोक
खाकर भी सोया हुआ स्वाभिमान जगाता नहीं। वे अपमा
वे तिरस्कार उन्हें कुछ बहुत बुरे नहीं लगते।

यह उदाहरण हमने बहुत छोटे दर्जे के लोगों के दिये हैं
ऊँचे दर्जे के लोगों में भी ऐसे असंख्य व्यक्ति भरे पड़े हैं
सभ्य भाषा में किये हुए अपमानों का हलाहल गले के नी
उतारते रहते हैं। सभ्य लोगों के बीच रहने के कारण कुछ थो
स्वाभिमान उनमें होता है वह अपमान की लात खाकर जरा
करवट बदलता है, अँगड़ाई लेता है और कुछ क्षण बाद फि
पूर्ववत् सो जाता है। गीता में "आत्म हनन" इसी को क
गया है। अपमान और तिरस्कारों की ठोकरें खाते खाते उनक
आध्यात्मिक भूमिका ऐसी निस्तेज, निर्जीव एवं हतवीर्य होजा
है कि उसमें अन्य उच्च गुणों को धारण करने की क्षमता नह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamwadi Math, VARANASI,
No. 2464

रहती। अत्यंत निर्बल और रोगिणी स्त्रियों को गर्भ नहीं रहता और यदि रह भी जाय तो वह स्थिर नहीं रहता-अधूरी अवधि में ही नष्ट होजाता है, इसी प्रकार अपमान सहने वालों में या तो अन्य अच्छे गुण आते नहीं यदि आते हैं तो चन्द रोज में ही वे विलीन होजाते हैं। जो बालक स्कूल में अधिक पिटते हैं बड़े होकर यदि वे अध्यापक बनजावें तो अपनी कक्षाके बालकों को खूब पीटते हैं। जो बहू घरवालों द्वारा सताई जाती है वह जब सास बनती है तो अपने बेटे की बहू को खास तौर से सताती है, बिना इसके उसे चैन ही नहीं पड़ता, इसी प्रकार जो लोग अपमानित होते रहते हैं वे अपने से छोटे लोगों को सताने और अपमानित करने में खूब निपुण होजाते हैं। बदबूदार वस्तुऐं जहां जमा होती रहेंगी वह स्थान दुर्गन्ध से भर जायगा और जिस जगह सुगंधित पदार्थ जमा होंगे वहां वैसी ही महँक उठेगी। अपमान के दूषित तत्वों को जो व्यक्ति पीता रहता है उसमें नीच कोटि की तामसी, पाप पूर्ण आदतों की भरमार होजाती हैं। ज्वालामुखी पर्वत के पेट में गंधक भरा होता है इसलिये वह अग्नि या भस्म ही उगल सकता है उससे किसी अच्छी वस्तु के उगलने की आशा करना व्यर्थ है। अपमान के घूंट पी पी कर जिसने अपना पेट भरा है। उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्व ही निकलते रहेंगे। ऐसा मनुष्य न तो कभी खुद सन्तोष पा सकता है और न अपने संबंधित व्यक्तियों को संतुष्ट रख सकता है।

स्वाभिमानी मनुष्य को यह जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी पड़ेगी कि वह अपमान का कड़ुआ घूंट पीने से इनकार करदे। द्रोपदी के अपमान का बदला चुकाने के लिये कुरुक्षेत्र का मैदान खून से लाल कर दिया गया था। भीम ने दुर्योधन की जांघ को गदा से तोड़कर ही दम लिया था। हमारा तात्पर्य किसी को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसेही भीम कर्म करनेके लिये उत्तेजित करनेका नहीं वरन् यह बतानेकाहै कि अपमान कितना कड़ुआ घूंटहै और उसका प्रतिशोध करनेके लिए लोग कितनी बड़ी जोखिम तक उठानेमें नहीं हिचकते। जो आत्म त्याग की इतनी बड़ी जोखिम उठाने को तैयार रहें वे ही आत्म गौरव जैसी बहुमूल्य सम्पत्ति की रक्षा कर सकते हैं। खजाने के पहरेदार को डाकुओं से लड़ने के लिए प्राण की बाजी लगाकर बन्दूक पकड़नी होती है। स्वाभिमान के खजाने की रक्षा में भी जोखिम है। जो जोखिम और जिम्मेदारी से डरते हैं उनके लिए सम्मान को सुरक्षित रखना कठिन है।

आप दूसरों का सम्मान करना सीखिए-इससे आपके सम्मान की रक्षा होगी। नियम यह है कि-"दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करिये जैसा अपने लिये चाहते हैं।" किसी को "तू" कहकर मत पुकारिये। यह असभ्य भाषा का शब्द है जिसका आध्यात्म मार्ग के पथिक को जल्द से जल्द अपने शब्द कोष में से निकाल कर बाहर कर देना चाहिए। अच्छा हो कि-आप आज से ही-अभी से ही-इसी घड़ी से ही "तू" का उच्चारण भुला देने का प्रयत्न करना आरंभ करदें। नौकरों को, बालकों को, स्त्रियों को,छोटों को,किसीको भी 'तू' कहकर मत पुकारिए। यह अपमान सूचक शब्द जिसके लिये कहा जाता है उसके आत्म गौरव को गिरा देता है, कम कर देता है। वैसे तो 'आप' शब्द ही सब के लिये ठीक है पर अधिक से अधिक ढील यह रखी जा सकती है कि 'तुम' शब्द का प्रयोग कर लिया जाय। यह 'तुम' भी मधुर स्वर में हलके ढंगसे इस प्रकार प्रयोग करना चाहिये जिसमें आदर सूचक ध्वनि निकलती हो। कटु शब्द बोलकर अपना और दूसरों का दिल दुखाने से क्या लाभ? जब उसी बात को नरमी के साथ कहा जा सकता है और उसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रभाव भी अधिक होताहै तब नाराज होकर अपना खून सुखाने, दुर्गुण बढ़ाने और दूसरे को चिढ़ाने की मूर्खता करने से क्या फायदा होता है इसे हम नहीं समझते। गाली देना और खास कर गंदी अश्लील गाली देना तो बिलकुल हैवानियत है। मां, बहिन और बेटियों के प्रति सरेआम बेइज्जती के वचन बोलना यह घोर असभ्यता और निर्लज्जता का चिन्ह है। यदि लड़ना है तो आप लोग सिर फोड़कर लड़लें पर बहिन बेटियों को बीच में न घसीटें। जिह्वा अन्न खाने और विवेक वचन बोलने के लिए है। इससे कोई अभक्ष नहीं खाता, उचित है कि इसी श्रेणी के काम 'गंदी गाली देने' को भी उससे न किया जाय।

मधुर बोलने की आदत डालेंगे तो दूसरे लोग आपके साथ भी करीब करीब उसी तरह पेश आवेंगे। कहते हैं कि अपनी इज्जत अपने हाथ है। जब भलमनसाहत, नम्रता, मधुरता और प्रतिष्ठा पूर्ण शब्दावली दूसरों के लिये प्रयोग करेंगे तो विश्वास रखिये वैसा ही मधुर बर्ताव आपके साथ भी होगा। यह दुनियाँ दर्पण के समान है, हर एक को अपना ही मुँह सामने खड़ा हुआ दिखाई पड़ता है। दुनियां की वाणी कुए की प्रतिध्वनि के समान है। पक्के कुए की मुंडेर पर खड़े होकर जैसे शब्द बोलेंगे कुए में से वैसे ही शब्द प्रतिध्वनित होकर लौट आवेंगे। जबान से मीठा बोलेंगे तो कान से मीठा सुनेंगे, इस हाथ दे उस हाथ ले का सीधा सौदा दुनियांकी हाटमें बिका करता है। इस खेत में अपने बोये बीज अनेक गुने होकर उग आते हैं। यदि आप इस तरह का भाषण करते हैं जो दूसरों को आदर सूचक प्रतीत हो तो विश्वास रखिये आप भी अपने लिए वैसा ही व्यवहार पावेंगे जिसमें आदर भाव की पर्याप्त मात्रा होगी। व्यवहार के साथ आचरण भी संबंधित है। केवल वाणी से ही नहीं, आचरण में भी नम्रता, सुजनता और शिष्टता का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संमिश्रण होना चाहिए। यथा स्थान बिठाना, स्वागत करना, मिलने की प्रसन्नता प्रकट करना, शिष्टाचार और सभ्यता का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। हँसी मजाक का स्वभाव अच्छा है, पर उसमें ऐसी उजड्डता, उच्छृंखलता न होनी चाहिए जो दूसरों को अपमानित करे, उनके मन पर ऐसा प्रभाव डाले कि मुझे तिरष्कृत किया जा रहा है।

ईमानदारी से चलने और मधुर भाषण एवं शिष्टव्यवहार के आधार पर आत्म सम्मान का तीन चौथाई प्रश्न हल होजाता है जब अपनी ओर से बेईमानी या असभ्य व्यवहार का आरंभ नहीं किया जाता तो संघर्ष के अवसर प्रायः बहुत कम आते हैं, बदले के रूप में जो झगड़े उठ खड़े होतेहैं उनकी मधुर व्यवहार के कारण जड़ ही कट जाती है। कहते हैं कि एक हाथ से ताली नहीं बजती। अपना पक्ष यदि स्वच्छहो तो विपक्षी की झगड़ालू वृत्ति भी शान्त हो जाती है। ईंधन न मिलने पर अग्नि अपने आप बुझ जाती है इसी प्रकार दूसरे लोग यदि बुरे स्वभाव के हों तो भी अपनी सुजनता के कारण उन्हें अनुचित व्यवहार करने का न तो अवसर मिलता है और न साहस होता है। इसी प्रकार सत्तर अस्सी प्रतिशत वे अवसर टल जाते हैं जिनमें पड़कर प्रायः मनुष्य अपमानित हुआ करता है।

अब एक चौथाई प्रश्न शेष रह जाता है। बीस तीस प्रतिशत अवसर ऐसे लोगों की ओर से आते हैं जिनकी वृत्तियां अत्यन्त क्रूर शोषक और अन्याय ग्रस्त होगई हैं। किसी कमीने आदमी को धन, अधिकार, ऊँचा पद, शारीरिक बल, तेज मस्तिष्क, कोई फायदेमन्द काम, मिल जाय तो उसका अहंकार अत्यंत विकराल रूप से बढ़ने लगता है। उस बाढ़ में यदि कोई रोक थाम न लगे नियन्त्रण न हो तो कुछ ही समय में वह इतना उग्र होजाता है कि अपनी समता में किसी को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं ठहराता । शतरंज के खेल में 'प्यादा' जब 'फर्जी' होजाता है तो वह टेढ़ा टेढ़ा चलने लगता है। नीच वृत्तियों के लोग अपनी औकात से अधिक संपदा प्राप्त करलें तो उनके घमंड का ठिकाना नहीं रहता । उस घमंड में मतवाले होकर वे शिष्टाचार सभ्यता और मनुष्यता तीनों को ही भूल जाते हैं और नाम मात्र के कारण पर या कभी कभी बिना कारण भी दूसरों का अपमान करते हैं । क्योंकि उनमें सद्गुण तो होते नहीं जिनके आधार पर सच्चा सम्मान प्राप्त कर सकेंगे। आत्मा की भूख सम्मान प्राप्त करने की होती ही है । उसे बुझाये बिना चैन नहीं पड़ता तब वे दूसरों का अपमान करके अपना बड़प्पन प्रकट करना शुरू करते हैं और बढ़ते बढ़ते इतने आगे बढ़ जाते हैं कि दूसरों का अपमान करना उनके बांऐं हाथ का खेल होजाता है । आदम खोर बाघ की डाढ़ में जब आदमी के खूनका चस्का लग जाता है तो वह जानवरों की शिकार छोड़कर इसी फिराक में रहता है कि कहां आदमी पाऊँ और कब अपनी लपक बुझाऊँ । ठीक इसी प्रकार की आदत उन कमीनों को पड़ जाती है, जब मौका पाते हैं, बिना उचित कारण के दूसरों पर बरस पड़ते हैं और गुण्डेपन से उनकी इज्जत आबरू खराब करते हैं । ऐसे लोगों पर साधारण विनय, सभ्यता, भलमनसाहत का कुछ प्रभाव नहीं पड़ता । या तो उन्हें पिघलाने के लिये असाधारण धैर्यवाला चिर तपस्वी आध्यात्मिक योगी चाहिए या फिर लात का जवाब घूंसे से देकर झुकाया जा सकता है ।

इस प्रकार के उजड्ड और अहंकारी व्यक्ति आतंक फैलाकर उसका अधिक लाभ भी उठाते हैं । गरीब और निर्बल लोगों को शोषण करना—यह एक वे पूंजी का बहुत ही सरल तथा लाभ दायक व्यवसाय साबित होता है । वे अपना आतंक जमाते हैं, अपने जैसे लोगोंकी गिरोह बन्दी करते हैं और उसे डरा धमका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर साधारण श्रेणी के असंगठित लोगों को लूटते खसोटते हैं, हर स्थान पर ऐसे लोग मिल सकते हैं जो आतंक के बल पर ही पेट भरते और सम्पत्ति जमा करते हैं। लड़ाई, झगड़े मार पीट, गाली गलौज, चोरी जारी करना कराना इनके बांए हाथ का खेल होता है, अपने पड़ौसियों को चैन से न बैठने देने में, उलझाए रखने में ही इनका चौधरीपन चल सकता है अतएव अपनी उपयोगिता कायम रखने के लिये नाना प्रकार के उपद्रवों की सृष्टि करते रहते हैं।

तीसरे प्रकार के वे कपटी और मायावी लोग हैं जो धर्म की, भलमनसाहत की, विद्वता की, बुजुर्गी की, पंचपने की आड़ में छिपकर शिकार खेलते हैं। सत्यता उनमें होती नहीं इसलिये अपनी असत्य एवं काली भावनाओं को धर्म, ईश्वर भक्ति, बुजुर्गी आदि को चोला पहनाकर लोगों की आंखों में धूल झोंकते हैं और ऐसे विचार एवं कार्यों को प्रोत्साहन देते हैं जिससे उनके व्यक्तिगत अहंकार की पूर्ति हो। भले ही उनकी क्रिया से किसी का कितना ही अनिष्ट क्यों न होता हो किसी को कितना ही कष्ट क्यों न सहना पड़ता हो। बाहर से दया धर्मकी चादर ओढ़कर अन्दर घोर पाषाण हृदय छिपाये रहते हैं, यह पाखंडी लोग बुरे से बुरे कर्म कर और करा सकते हैं पर होने चाहिये वे पर्दे की आढ़ में। यदि कोई अपनी अन्तर्वाणी को स्पष्ट रूप से प्रकट करे और वह इनकी कपट चादर पर छपे हुए सिद्धान्तों के विपरीत पड़ते हों तो बस समझ लीजिये— अनर्थ उपस्थित कर देंगे। ऐसी चीख पुकार मचावेंगे मानों सारी पृथ्वी की धर्म धुरी इन्हीं की छाती पर रखी हुई है और यदि ये उसे न सँभाले रहेंगे तो दुनियां से धर्म का लोप ही हो जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे लोग मानवीय स्वाभिमान के लिये एक चुनौती के

समान हैं। इनकी प्रवृत्तियों को सहन कर लेने का अर्थ है उनके कार्य में सहयोग देना। यह लोग साधारणतः तर्क, दलील, प्रमाण और प्रार्थना से पिघलते नहीं। रिश्वत देकर या तो इन्हें शान्त किया जा सकता है या फिर दंड देकर। उनका अन्याय सहन कर लेने या रिश्वत देकर शान्त करने से कुछ समय के लिये काम भले ही चल जाय पर कुछ समय पर दूसरे रूप में या दूसरों पर उनका असुरत्व प्रकट होगा और फिर पूर्ववत् यन्त्रनाओं की सृष्टि होने लगेगी। पूर्ववत् ही नहीं पहले से भी अधिक तीव्रगति से; क्योंकि प्रत्येक सफलता के साथ उसकी हिम्मत और निरंकुशता बढ़ती जाती है। अन्याय और निरंकुश अहंकार के सामने आत्म समर्पण कर देना बेइज्जती का दूसरा रूप है। बेईमानी का आचरण करके जिस प्रकार मनुष्य अपने स्वाभिमान को खो देता है उसी प्रकार अत्याचारी के आगे नाक रगड़ने से भी आत्म गौरव नष्ट करता है। आपके आत्म समर्पण का परिणाम यह होगा कि अपना स्वाभिमान, साहस, तेज नष्ट होजायगा, बदनामी फैलेगी लोग कायर और नपुंसक समझेंगे, आगे के लिये दिल कमजोर होजायगा, निराशा, गिरावट और काहिली की हलकी सी सतह ऊपर छाने लगेगी। अपनी पराजय को देखकर दूसरे अनेक लोग भी वैसी तरह डर जायंगे और उस भय की जलन से सद्गुणों के वे अनेक अंकुर जलकर नष्ट होजांयगे जो मानस भूमिका में थोड़े ही समय पूर्व जमे थे और अपरिपक्व थे। अन्याय के आगे माथा टेक देने का परिणाम करीब करीब उतना ही भयंकर होता है जितना कि स्वयं अन्याय करने का। सच तो यह है कि अन्याय सहने वाला अन्याय करने वाले से भी अधिक पापी है। कहते हैं कि—"जालिम का यार मुजरिम" होता है। यदि अन्याय सहने के लिये लोग तैयार न हों, उसका विरोध प्रतिरोध करने के लिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तत्पर होजावें तो निस्संदेह जुल्मों का अन्त हो जा सकता है।

हो सकता है कि आपको योग्यता सम्पन्न, बुद्धिमान देखकर व्यक्तिगत रूप से वे अधर्मी लोग कुछ रिआयत करदें और संघर्ष की संभावना देखकर बचकर निकल जांय अथवा सहयोग प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष कृपा प्रदर्शित करें। उनकी इन चालों में फँस जाने का अर्थ अप्रत्यक्ष रूप से अपने आत्म गौरव को खोना है। ईश्वर ने आपको बल, बुद्धि, विद्या तथा योग्यता देते हुये यह जिम्मेदारी भी दी है कि अपने से अल्प शक्ति वालों की इन योग्यताओं द्वारा रक्षा की जाय। केवल अपने व्यक्तिगत लाभ तक ही दृष्टि को सीमित रखना मनुष्यता को कलंकित करना है। खजूर का वह बड़ा पेड़ किस काम का जो खुद ही आकाश में चढ़ा रहताहै पर उसकी छाया में बैठने का लाभ किसी को प्राप्त नहीं होता।

अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम एक खुली चुनौती है जिसे वीर पुरुषों को स्वीकार करना ही चाहिए। अपने ऊपर न सही, दूसरे निर्दोष व्यक्तियों के ऊपर यदि जुल्म होता है तो उसका प्रतिरोध करना आवश्यक है। बुराई से लड़ना हर स्वाभिमानी का फर्ज है। आप अन्याय के साथ, बहादुर सेनापति की तरह जूझ पड़िये। बुद्धिमानीसे हाथ पांव बचाकर, पैंतरा बदल कर युद्ध करिए और एक योद्धा जिन कुशलताओं से काम लेता है, आप उनका प्रयोग कर सफलता को सरल बनाइये। साथ ही इसके लिये भी तैयार रहिए कि उस युद्ध में यदि जूझ जाना पड़े, सर्वस्व नष्ट होजाय, वीर गति प्राप्त हो तो उसे हंसकर स्वीकार किया जाय। योद्धा के लिये विजय और वीरगति एक समान ही आनंददायी है क्यों कि दोनों में ही एक समान आत्म गौरव की रक्षा होती है। विजयी वीरों के नाम इतिहास में गौरव के साथ लिखे हुये हैं पर पराजित वीरों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के नाम उनसे भी अधिक आदर के साथ स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए हैं ईसामसीह दुष्टों के आगे हार गया, वीर हकीकतराय, बन्दा वैरागी, राणा प्रताप, पराजित कहे जा सकते हैं परन्तु जिनकी आंखें हों वह देखें कि वह पराजय, विजय से अधिक मूल्यवान है। उन महापुरुषों का आत्म गौरव इन पराजयों ने और भी अधिक चमका दिया। क्या वे पराजयें-विजय से कम महत्व पूर्ण हैं ? अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहना वास्तव एक बड़ी ही सम्माननीय वीरोचित जीवन प्रणाली है, जिसे हर मनुष्य को अपने जीवन का एक अंग बना लेना चाहिये। संसार में अन्याय और जुल्मों की सृष्टि ईश्वर ने इसीलिये की है कि उनसे लड़कर सुयोग्य मनुष्य अधिक उन्नति करें, अधिक आनन्द पावें। अखाड़े में भारी भारी पत्थर और मुद्गर इसलिये रखे जाते हैं कि इनसे जूझ जूझ कर पहलवान लोग अधिक बलवान बनें। आपके आस पास जो अन्याय अत्याचार फैले पड़े हैं उनसे लड़ पड़िये। जूझिये, प्रतिरोध कीजिये, संघर्ष करिये और मिटाने के लिये हर संभव एवं उचित प्रयत्न को काम में लाइए। कदाचित आप अपने को अकेला, एवं निर्बल अनुभव करते हों और परिस्थिति वश उस समय संघर्ष करनेकी अवस्था में न हों तो इतना तो अवश्य करिये कि अन्तःकरणको पराजित मत होने दीजिये। आत्म समर्पण मत करिये। अन्याय के विरुद्ध घृणा रखिये, विरोध रखिये और लड़ने का अवसर तलाश करते रहिए। जब, जितने अंशों में, जुल्म से विरोध करना संभव हो, करने में मत चूकिए। शारीरिक न सही तो मानसिक युद्ध अवश्य जारी रखिये। इस प्रकार एक योद्धा की तरह जीवन रूपी कर्म भूमि में अन्याय के विरुद्ध सदैव संघर्ष करते रहिए। यह आपके लिये बड़ी प्रतिष्ठा की बात होगी। इस मार्ग में जो कष्ट, प्रहार, आघात और घाव सहने पड़ेंगे वह अपमान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूचक नहीं वरन् स्वर्ण पदकों के समान सुशोभित होंगे। इस संघर्ष पथ में खाई हुई प्रत्येक चोट आपके आत्म सम्मान को अधिक ऊँचा उठाने वाली सिद्ध होगी।

आत्म सम्मान की प्राप्ति और रक्षा के तीन उपाय हैं (१) अपने विचार और व्यवसाय को ईमानदारी से भरा हुआ रखिए (२) अपने भाषण और व्यवहारको आदर और सभ्यता पूर्ण रखिए (३) जुल्म और ज्यादती के खिलाफ धर्म युद्ध जारी रखिए। इस त्रिवेणी में स्नान करते हुए सच्चे आनंद का लाभ करेंगे और मानव जीवन की सबसे बड़ी नियामत आत्म सम्मान की प्राप्ति और रक्षा में समर्थ हो सकेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौथा पाठ

बाहरी रहन सहन भी आत्म सम्मान के उपयुक्त बनाइए !

ऊसर भूमि में बीज नहीं जमता। क्योंकि उसमें उत्पादक शक्ति का अभाव होता है, चाहे कैसा ही बढ़िया बीज डालिए, परिश्रम पूर्वक सिचाई कीजिए पर उस भूमिमें हरे भरे पल्लवित पौधे लहलहावेंगे, यह आशा करना व्यर्थ है। अच्छे पौदे उसी भूमि में उगेंगे जिसके गर्भ में उर्वरा शक्ति विद्यमान होगी। इसलिए अच्छा किसान जब बढ़िया फसल काटने की बात सोचता है तो सबसे पहले खेतों की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करता है। अच्छी जमीन लेता है, खाद डालता है, जुताई करता है जब उसे विश्वास होजाता है कि खेत में काफी उर्वरा शक्ति होगई तब वह उसमें बीज डालता है और अच्छी फसल काटता है। ऊसर एवं हीन वीर्य खेत में बीज बोदेने पर भला किसानके हाथ क्या लगेगा? बेचारे का बीज और परिश्रम मुफ्त में ही चला जायगा। इसी प्रकार जीवन को उन्नत,प्रभावशाली, सम्पत्तिवान्, बलिष्ठ, विवेक युक्त, सद्गुणी बनाने से पूर्व इस बात की आवश्यकता है कि अन्तःकरण में आत्म सम्मान प्राप्त करने की उत्कंठा प्रचण्ड गति से हिलोरें मार रही हो। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जरूरत पड़ने पर बुद्धि उपायों की खोज करती है, जिन्हें जरूरत नहीं, इच्छा आकांक्षा नहीं उन्हें उपाय ढूंढने का परिश्रम भी गवारा नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता। जीवन को अनेक दिशाओं में उन्नत एवं समृद्ध बनाने वाली उत्पादन शक्ति का नाम है-"आत्म सम्मानकी आकांक्षा"। जो अपने को प्रतिष्ठित, बड़ा आदमी, महापुरुष, अधिकारी, बनाना चाहता है वह उसके लिये उपाय ढूंढेगा और यह सचाई सूर्य की तरह स्पष्ट है—'ढूंढने वाले को मिलता है।" जिसने खोजा है उसने पाया है।

विद्वत्ता, धन, पदवी, अधिकार, कला कौशल, उत्तम स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, नेतृत्व आदि प्रतिष्ठास्पद पदार्थ प्राप्त करने के लिये जितने परिश्रम, प्रयत्न और धैर्य की आवश्यकता है वह यों ही उत्पन्न नहीं हो जाता। तामसी वृत्तियां सदैव आलस और अकर्मण्यता की ओर झुकाती हैं। इसलिए अक्सर ऐसे विचार भी उठा करते हैं कि "जो है उसी में संतुष्ट रहो, कोशिश करने से क्या फायदा, भाग्य का होगा तो घर बैठे मिल जायगा।" अकर्मण्यता के साथ आलस्य आता है, बुद्धि और शरीर से कड़ी मेहनत लेना तामसी वृत्तियां नापसंद करती हैं वे चाहती हैं कि बिना मेहनत किये काम चलजाय, आराम से पड़ा रहा जाय। हम देखते है कि इन्हीं तामसी वृत्तियों में अधिकांश व्यक्तियों का अधिकांश जीवन ग्रसित रहता है। तदनुसार वे अपने अन्दर छिपे पड़े हुए शक्तियों के अतुलित भंडार को यों ही निकम्मा पड़ा रहने देते हैं और अर्धं मूर्छित अवस्था में जीवन क्रम चलाते हुए आयु को पूर्ण कर जाते हैं। अच्छी परिस्थितियां और सुविधाऐं मिलने पर भी कोई विशेष उन्नति नहीं हो सकती यदि मनुष्य के अन्दर महत्वाकांक्षा न हो। वे ही लोग ऊँचे उठ सकते हैं, सफल जीवन हो सकते हैं जो उस प्रकार की इच्छा आकांक्षा करते हैं। यह इच्छाऐं जब प्रबल होती हैं तो शरीर और मस्तिष्क की शक्तियों को इसी प्रकार जबरदस्ती खीच ले जाती हैं जैसे तेज चलने वाला आतुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घोड़ा, जिस रथ में जुता है उसे सरपट दौड़ा ले जाता है। अपनी गौरव बढ़ाने की, सम्मान प्राप्त करने की, अपनी महत्ता प्रकट करने की, महत्त्वाकांक्षा जब जोर मारती है तो योग्यताऐं और शक्तियां अपना अपना काम करने में जुट जाती हैं और जो कार्य पर्वत के समान दुर्गम दिखाई पड़ते थे वे बड़ी आसानी से पूरे हो जाते हैं। संचित योग्यताऐं तो अपना काम करती ही है-साथ ही आवश्यकता के दबावके कारण सोई हुई अविकसित शक्तियां भी जागृत होकर क्रिया शील बनती जाती हैं। मानवीय शक्तियों का अन्त नहीं, जब जागरण का प्रवाह चल पड़ता है तो इन शक्तियों की संख्या और मात्रा में दिन दिन उन्नति होती जाती है। जो व्यक्ति पहले मंद बुद्धि, दुर्बल शरीर, आलसी, हतवीर्य दिखाई पड़ते थे वे ही आत्म सम्मान की आकांक्षा को तीव्र करके जब कर्तव्य पथ पर चल पड़े तो इतने तीव्र बुद्धि, स्वस्थ, कर्मनिष्ठ और तेजस्वी सिद्ध हुए जिसकी आशा उनके आरंभिक जीवन में बिलकुल नहीं होती थी।

मानव तत्व की खोज करने वाले आचार्य इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि संपूर्ण प्रकार की उन्नतियां आत्म सम्मान की महत्वाकांक्षा से प्रेरित होने पर ही होती हैं। स्फूर्ति, उत्साह, विवेचना, खोज, साहस, परिश्रम और धैर्य यह सब उन्नति के अग्रदूत-असल में महत्वाकांक्षा के अभिन्न सहचर हैं। जब आत्मा किसी प्यास से बेचैन होकर सचमुच यह पुकार करती है कि "मुझे अमुक वस्तु चाहिये" तो उसकी सारी सेविकाऐं-प्रमाद छोड़कर उठ खड़ी होती हैं और अपनी रानी की मनोवांछा पूरी करने में जां फिसानी से जुट जाती हैं। सेविकाऐं तभी तक आलस्य, प्रमाद, हुक्म अदूली करती है जब तक कि मालकिन की इच्छा और आज्ञा अस्पष्ट, अधूरी होती है। तीव्र इच्छा का पालन भी तीव्र गति से होता है। चाह होने पर राह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकलती है। इच्छा की शक्ति महान है उस महा शक्ति के लिए इस संसार में कोई भी वस्तु प्राप्त करना असंभव नहीं है। इन्हीं सब बातों पर गंभीर विवेचना करने के उपरान्त आध्यात्म शास्त्र ने यह उपदेश किया है कि इस संसार में समृद्धि सौभाग्य और परलोकमें सुख शान्ति प्राप्त करनेकी इच्छा करने वालों को अपने आत्म सम्मान को बढ़ाने और उसकी रक्षा करने का प्रबल प्रयत्न करना चाहिये। आध्यात्मिक गुणों में 'आत्म सम्मान' का स्थान बहुत ऊँचा है क्योंकि यह प्रेरणाओं का केन्द्र है। बिजली घर का शक्ति स्रोत नगर की सारी बस्तियों को प्रकाशवान् करता है; आत्म सम्मान जन्य महत्वाकांक्षा का विद्युत प्रभाव नस नस में योग्यता और चतुरता भर देता है। अकर्म करने से रोकता है और सत्कर्मों में प्रवृत्त करता है। अपने चारों ओर ऐसे धर्म युक्त, सुख शान्ति मय, पुनीत वातावरण का निर्माण कर देता है जिसमें रहकर मनुष्य हर घड़ीयह अनुभव करता है कि मैने अपने जीवन का सदुपयोग किया, जीवन फल पाया और भूलोक के अमृत का प्रत्यक्ष रूप से आस्वादन किया।

आत्म सम्मान की प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक बहुत पुराना मंत्र है जो आज की परिस्थितियों में भी ज्यों का त्यों उपयोगी बना हुआ है। वह मंत्र है—"सादा जीवन, उच्च विचार"। प्राचीन समय में बालकपन से लेकर वृद्धावस्था तक इसी ढांचे में लोगों के जीवन ढले रहते थे। आज बेतरह का जमाना बरत रहा है। जीवन को बनावटी और विचारों को नीच बनाने की लत लोगों को पड़ती जाती है। भ्रमवश वे ऐसा समझते हैं कि हमारी बनावटी चमक दमक के भुलावे में आकर लोग हमें बड़ा आदमी समझने लगेंगे। वे अपनी औकात से अधिक टीम टिमाक बनाते हैं, विलायती फैशन की नकल,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहनने ओढ़ने, खाने पीने, बोलने चालने में करते हैं, वे सोचते हैं कि इंग्रेज लोग हिन्दुस्तानके शासक हैं, उन्होंने तरह तरह के आविष्कार किये हैं हिन्दुस्तानी लोग उनसे डरते हैं, इसलिए उनकी नकल हम बनावें तो लोग हमें भी आधा अँग्रेज समझ कर खौफ खाने लगेंगे, बड़ा आदमी समझने लगेंगे। फलतः इंग्रेजी बाल रखाते हैं, अँग्रेजी फैशन के कपड़े पहनते हैं, अँग्रेजी ढङ्ग का आहार चाय, बिस्कुट, सोडा, शराब, सिगरेट व्यवहार करते हैं, टूटी फूटी अँग्रेजी में ही बात करते हैं। जिस इच्छा से भ्रमवश इस प्रयत्न को वे करते हैं फल उस से बिलकुल उलटा होता है। कारण यह कि इस देश की गरम आबहवा में योरोप के घोर शीत प्रधान देशों की चाल ढाल बिलकुल मौजू नहीं वरन् उलटी हानिकारक है। इससे उनके स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा असर पड़ता है। दूसरी बात यह है कि अनुपयुक्त और बुरे उद्देश्य से की हुई नकल सदा उपहासास्पद होती है। कहानी है कि—एक कौआ मोर के पर लगाकर मोर बनने लगा इस पर मोर और कौए दोनों ही उससे क्रुद्ध होगये और दोनों ने उसे बहिष्कृत कर दिया। राजनैतिक कारणों से वाह्यतः कोई शासक यह भले ही पसंद करें कि हिन्दुस्तानी लोग अँग्रेजी जामे में कसे फिरें, पर मन ही मन वे भी उनकी कायर बृत्ति पर तिरष्कार करते होंगे। वे सोचते होंगे यह लोग हमारी खुशामद के लिये ऐसे कपड़े पहनते हैं अन्यथा यदि इन्हें हमारे सद्गुणों की नकल करनी थी तो यह नकल करते कि हम लोग यूरोप के ठंडे देश की पोशाक इस देश में अनुपयुक्त होते हुए भी अपनी संस्कृत की रक्षा के लिये पहनते हैं और जो थोड़ी कठिनाई पड़ती है उसे भी सहन करते हैं इसी प्रकार भारतीय लोग अपनी उस पोशाक को न छोड़ें जो उनके लिए सर्वथा उपयुक्त है और संस्कृति का चिन्ह भी है। समझदार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय भी उनके इस मोर बनने के प्रयास पर हँसते हैं, इतनी खर्चीली, हानिकर फैसन बनाकर काले साहब बनने का प्रयत्न उपहासास्पद ही तो समझा जा सकता है।

आप इन निरर्थक उपहासास्पद प्रयत्नों को छोड़कर आत्म सम्मान के मार्ग पर बढ़िये। अपनी वेश भूषा में सम्मान अनुभव करिये। सादगी किफायतशारी और संस्कृति रक्षा, जब तीनों ही बातें अपनी स्वदेशी वेष भूषा में प्राप्त होती है तो फिर ऐसा पहनावा क्यों पहनें जो हानिकर भी है और आत्म सम्मान की दृष्टि से अनावश्यक भी। आप धोती कुर्ता पहना कीजिये। यह भारतीय पोशाक है, सादगी से भरी हुई है और अपने मन के भावों से परिपूर्ण है। "सादा जीवन उच्च विचार" के मन्त्र का दोनों ही भावों की रक्षा स्वदेशी पोशाक पहनने से होती है। चापलूसी करने, नकलची बनने, या आत्म समर्पण करने का भाव इसमें नहीं है वरन् आत्म गौरव और देशभक्ति का पुट है। समता, नम्रता, गंभीरता, दूर दर्शिता, और विचार शीलता को यह प्रकट करती है। स्वदेश बन्धुओं के हाथ का कता बुना कपड़ा, स्वदेशी ढङ्ग से जब आप पहनते हैं तो उससे आत्म सम्मान के महत्व पूर्ण अंश की पूर्ति होती है। इस मार्ग पर कदम बढ़ाते हुए आप अपनी निजी वेष भूषा को ग्रहण कर लीजिये, वस्त्रों के अतिरिक्त अन्य वस्तुऐं भी जहां तक संभव हो अपने देश की बनी हुई, अपने देश की कला के साथ बनी हुई प्रयोग किया कीजिये। तथा अपने प्रिय परिचित जनों को भी ऐसी ही प्रेरणा किया कीजिए। इससे आपके आध्यात्मिक भावों में वृद्धि होगी। आत्म सम्मान का पथ प्रशस्त होगा।

किसी ढांचे में अपने को ढालने के लिये आस पास का वातावरण भी वैसा ही बनाना पड़ता है। परिस्थितियों का
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
अप्रत्यक्ष रूप से विशेष प्रभाव पड़ताहै, कई व्यक्ति अच्छे विचार

तो रखते हैं पर आस पासकी बुरी परिस्थितियों को नहीं बदलते फलतः ऐसे अवसर आजाते हैं जब कि उनसे कार्य भी बुरे ही होने लगते हैं। अतएव अपने दैनिक कार्य क्रम में से उन बातों को चुन चुनकर निकाल देना चाहिये जिनके कारण अवांछनीय परिणाम उत्पन्न होने की आशंका हो। इस शंसोधन में जितनी सूक्ष्म बुद्धि से काम लेंगे, उतनी ही अधिक सफलता होगी। छोटे छोटे रोड़े जो नित के अभ्यास में आजाने के कारण कुछ बहुत बुरे नहीं मालूम पड़ते, किसी दिन दुखदायी घटना उपस्थित कर सकते हैं इसलिए उन्हें पहचानने और हटाने में ढील न करनी चाहिये। रेल की पटरी पर रखा हुआ एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा, समूची रेलको उलट देने का कारण हो सकता है इसी प्रकार छोटे छोटे अनुचित प्रसंग किसी दिन आत्म सम्मान के घोर घातक प्रमाणित हो सकते हैं।

मजाक के तौर पर बहुत से आदमी अश्लील शब्दों का उच्चारण करते हैं। ऐसा वे कौतूहल के लिए हलके तौर पर करते हैं कोई विशेष स्वार्थ उनका नहीं होता पर कौतूहल ही कौतूहल में कुवचन बोलने की आदत पड़ जाती है और वह आदत किसी अपरिचित व्यक्ति के सामने अनायास ही प्रकट हो तो वह अपने मन में बहुत शीघ्र यह विश्वास जमा लेगा कि यह दुच्चा आदमी है। बेहूदे तरीके से बात करना, अकारण बेतरह दांत फाड़ना, विचित्र भाव भंगी बनाते रहना, निकृष्ट प्रसंगों को वार्तालाप का विषय बनाना, इस तरह के काम यद्यपि पाप युक्त नहीं होते तो भी दूसरों पर यह प्रकट करते हैं कि यह आदमी हलके मिजाज का, उथला, असंस्कृत, गँवार या लुच्चा है। लोगों का इस तरह का स्वभाव अपने बारे में अकारण बने, यह कोई अच्छी बात थोड़े ही है। आपकी मुख मुद्रा, गम्भीर रहनी चाहिये। हँसना मुसकराना, प्रसन्न रहना, एक कला है यह एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यक गुण है पर यह गुण इस प्रकार बरता जाना चाहिये कि दुर्गुण न बन जाय। प्रसन्न रहने की आदत के साथ गम्भीरता, सौम्यता, तेजस्विता भी रहनी चाहिए। मुख मुद्रा में गौरव और बड़प्पन की रेखाऐं भी नियोजित होनी चाहिए।

गठियाकी बीमारीका इलाज करते समय कुछ दवाऐं खाई जाती हैं कुछ तेल आदि दर्दकी जगह पर लगाई जाती हैं। दोनों ओर से जब काटने पर बीमारी जल्द अच्छी होती है। भीतर अन्तःकरण में सद्गुणों को भरते जाइये और बाहरी वेष भूषा, मुख मुद्रा, कार्य शैली, तथा आदतों को उसी ढांचे में ढालते जाइये। यह ठीक है कि सद्गुणों के साथ बाहरी रूप रेखा बदल जाती है पर यह भी ठीक है कि बाहरी वेष निर्माण से स्वभाव पर असाधारण प्रभाव पड़ता है। दवा खाने से बीमारी की जड़ कटती है पर दर्द की जगह पर सेक, मालिस, लेप करना भी अकारथ नहीं जाता। भीतरी उपाय की भांति बाह्य उपचार भी अपना महत्व रखता, उस महत्व पूर्ण बात को हमें उपेक्षा में नहीं डाल देना चाहिये।

आपके आस पास की वस्तुऐं ऐसी होनी चाहिए जो अपने सद्गुणों का गौरव प्रकट करती हों। अपने शरीर को स्वच्छ रखिये, किन्हीं छिद्रों में गंदगी जमा न होनी चाहिये जिससे बदबू उड़े और उड़कर दूसरों के कान में अपनी कुरुचि की, गन्देपन की चुगली कर आवे। वस्त्रों को स्वच्छ रखिये, उन पर न तो मैल जमा होने दीजिए और न धब्बे पड़ने दीजिये वस्त्र यद्यपि वे नवान है तो भी उनके हर धागों से एक वाणी निकलती है। स्वच्छ कपड़ा अपने पहनने वालों की कोटि कोटि केन्द्रों में से प्रशंसा करता है उसकी सुरुचि का बखान करता है। आप कपड़े की इज्जत रखिये, कपड़ा आपकी इज्जत रखेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिक कीमती, महँगा, विलायती, चमक दमक का कपड़ा पहनने में कोई बड़प्पन नहीं है। बड़प्पन है उसे स्वच्छ और निर्मल रखने में, तरतीब से यथा क्रम पहनने में। सस्ता मोटा कपड़ा हो तो कुछ हर्ज नहीं, फटजाने पर सी लिया गया हो तो भी कुछ हर्ज नहीं, बल्कि यह किफायतशारी और बुद्धिमानी का चिन्ह है। हर्ज लापरवाही में है, भोजन करते वक्त दाल की बूंदें कुर्ते पर गिर पड़ें और उनका पीला धब्बा चमकता रहे यह बुरी बात है। रूमाल पर मुँह पोंछते वक्त पान का कत्था लग जाय और वह लाल लाल दीखे यह बुरी बात है। धोती की आधी पूँछ लटकती फिरे, कुर्ते के दो बटन टूटे हुए हों सिलाई उधड़ गई हो, सलवटें और ऐठनें पड़ रही हों, लापरवाही से पहना गया हो तो वह कपड़ा चाहे बहुमूल्य ही क्यों न हो आपकी सुस्ती, काहिली, लापरवाही, की चुगली करता फिरेगा। कहते हैं कि घर का भेदी लंका ढा देता है, हो सकता है कि शरीर के साथ रहने वाला भेदी और भी बड़ा कोई अनर्थ उपस्थित करदे।

छोटी बातों की उपेक्षा मत कीजिए, क्योंकि छोटी छोटी वस्तुऐं मिलकर ही बड़ी वस्तु का निर्माण करती हैं। दूसरे लोगों को इतनी फुरसत नहीं है कि वह तुम्हारे गुणों को जानें परीक्षा करें और तब कुछ धारणा बनावें आमतौर पर बाहरी रूप रेखा से, छोटी छोटी आदतों से, मुख मुद्रा से, पहनाव उढाव और बात चीत के ढंग से उसके चरित्र गुण और व्यक्तित्व की परख की जाती है। व्यवहारिक सावधानी में कुशल व्यक्ति, साधारण सद्गुण वाला होते हुए भी विशेष सफल रहता है जबकि बड़े बड़े प्रामाणिक व्यक्ति बाह्य रूप रेखा की लापरवाही के कारण असफल होजाते हैं। एक प्रामाणिक व्यक्ति व्यापार के सम्बन्ध में बाहर जाता है, उसकी चाल ढाल, वेष भूषा अस्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यस्त, लापरवाही की है। जिस दुकानदार से वह माल के संबंध में वार्तालाप करता है उस पर सबसे पहला प्रभाव उसके बेतरतीब कपड़ों का अस्त व्यस्त चाल ढाल का पड़ता है, दुकानदार सोचता है यह लापरवाह, अव्यवहारिक और अदूरदर्शी व्यक्ति है, इसकी कार्यव्यवस्था तथा वस्तुओं की श्रेष्ठता भी ऐसी ही होगी। यह सोचकर वह दुकानदार या तो उस व्यापारी से व्यापार करता ही नहीं या करता है तो परीक्षा के लिए बहुत थोड़ा। जब तक परीक्षा करके सचाई पर विश्वास करने का अवसर आता है जब तक कोई दूसरा व्यापारी उस दुकानदार को प्रभावित करके बड़ी तादाद में अपना माल दे देता है। पहला व्यापारी असफल रहा, इसका कारण उसकी सचाई या प्रामाणिकता में कमी होना नहीं है वरन् यह है कि वह प्रामाणिकता को प्रकट करने की कला में निपट अनाड़ी था।

निर्गुण ब्रह्म के साथ त्रिगुणमयी माया भी है, शेषशायी विष्णु के साथ लक्ष्मी शोभा बढ़ा रही हैं, अवधूत शंकर के साथ देव कन्या पार्वती का संबंध है। सत्य के साथ कला की भी आवश्यकता है। जो वह कला से अपरिचित हैं वे चाहे व्यापारी, श्रमी, बुद्धिजीवी, नेता, वक्ता, कोई भी क्यों न हो, केवल सत्य के ही आधार पर उतनी मात्रा में सफल नहीं हो सकते, जितने के सत्य के साथ कला का भी समन्वय करके हो सकते हैं। १ और १ जब मिल जाते हैं तो उनकी शक्ति ११ हो जाती है। सत्य के साथ सत्य उसको प्रकट करनेकी कला को भी जब मनुष्य जान जाता है तो उद्देश्य की सफलता बहुत ही आसान हो जाती है।

आप अपने घर को—वस्त्रों को, शरीर को, स्वच्छ रखा कीजिए, वस्तुओंको इसतरह से तरकीबके साथ सुसज्जित रखिए जिससे वे सुन्दर प्रतीत हों साथ ही आपकी आन्तरिक सुन्दरता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को प्रकट करें। अपनी हर कृति में उस पद्धति को समन्वित होने दीजिये जिसके द्वारा आत्म सम्मान की वृद्धि होती हो। स्वच्छ, स्वदेशी, भारतीय वेष भूषा के वस्त्र, मल रहित छिद्रों का दुर्गन्ध रहित शरीर, गम्भीर, विवेक युक्त, प्रामाणिक मुख मुद्रा, यह तीनों की बातें आत्म गौरव की वृद्धि करती हैं। आपके कमरे में अर्ध नग्न स्त्रियों के नहीं वरन् लोक सेवी महापुरुषों के चित्र होने चाहिए, आपकी अलमारी में बाजारू, अश्लील, पथ भ्रष्ट पुस्तकें नहीं वरन् ज्ञान वृद्धि करने वाला, चरित्र निर्माण करने वाला, साहित्य रहना चाहिये। आपका बैठना उठना। निकृष्ट मुहल्लों में, निन्दनीय लोगों के साथ नहीं वरन् प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ होना चाहिए। किसी से वार्तालाप आरंभ करें तो उसमें उच्चता का, आदर्शवाद का, पुट रहना चाहिये। नम्रता, विनय, शिष्टाचार, और सद् व्यवहार को अपनी प्रधान नीति रखें पर अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए एक वीर योद्धाकी तरह सदैव प्रस्तुत रहें। बारबार अपने कार्यों विचारों पर दृष्टि डालकर यह निरीक्षण करते रहें कि आत्म सम्मान के गिराने वाले तत्व अभी कितने अंशों में बाकी हैं. और उनका निवारण शीघ्र से शीघ्र किस प्रकार किया जा सकता है।

आत्म सम्मान को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्राण प्रण से चेष्टा करते रहिये क्योंकि यह बहुमूल्य सम्पत्ति है। पैसे की तरह यह आंख से दिखाई नहीं पड़ता और पास रखने के लिये तिजोरी की जरूरत नहीं पड़ती तो भी स्पष्टतःयह धन है। हम ऐसे व्यापारियों को जानते हैं जिनके पास अपनी एक पाई न होने पर भी दूसरों से उधार लेकर बड़े बड़े लम्बे चौड़े व्यापार कर डालते हैं क्योंकि उनका बाजार में सम्मान है, ईमानदारी की प्रतिष्ठा है। हम ऐसे नौकरों को जानते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

gamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 34892

जिन्हें मालिक अपने सगे बेटे की तरह प्राण से प्यारा रखते हैं और उनके लिए प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से इतना पैसा खर्च कर देते हैं जो उनके निर्धारित वेतन से अनेक गुना होता है कारण यह कि नौकर के सद्गुणों के कारण मालिक के मन में उसका सम्मान घर कर लेता है। गुरुओं के वचन मानकर श्रद्धालु शिष्य अपना सर्वस्व देने के लिए तत्पर होजाते हैं, अपनी जीवन दिशा बदल देते हैं, प्यारी से प्यारी वस्तु का त्याग कर देते हैं, राज महल छोड़कर भिखारी बन जाते हैं, ऐसा इसलिए होता है कि शिष्य के मन में गुरु के प्रति अगाध सम्मान होता है, गुरु का आत्म सम्मान शिष्य को अपना वशवर्ती बना लेता है। अदालत में किसी एक ही गवाह की गवाही विपक्षी सौ गवाहों की बात को रद्द कर देती है, कारण यह कि उस गवाह की प्रतिष्ठा न्यायाधीश को प्रभावित कर देतीहै। आत्म सम्मान ऊँची कोटि का धनहै जिसके द्वारा ऐसे महत्व पूर्ण लाभ हो सकते हैं जो कितना ही पैसा खर्च होने पर नहीं हो सकते थे। पैसेके द्वारा लोगोंके शरीर और इच्छित भोगपदार्थ खरीद सकता हैं पर प्रतिष्ठा वाला असंख्य हृदयोंपर वे पैसे का शासन करता है और वह शासन इतना अटूट एवं शक्ति शाली होता है कि उसके द्वारा वे वस्तुऐं बिना मांगे मिल जाती हैं जिनको खरीदने के लिए प्रचुर धन की आवश्यकता होती है।

आत्म सम्मान धन है। बाजार में वह पूंजी की तरह निश्चित फल देने वाला है, समाज में पूजा कराने वाला है, आत्मा को पौष्टिक भोजन देने वाला है, परलोक में शाश्वत सुख प्रदान करने वाला है, इसलिए हम कहते हैं कि—हे आध्यात्म वाद का आश्रय लेने वाले शूरवीर साधको! आत्म सम्मान सम्पादित करो और प्रयत्न पूर्वक उसकी रक्षा करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें।

यह बाजारू किताबें नहीं हैं, इनकी एक एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसंधान है। विनम्र शब्दों में हमारा दावा है कि इतना खोज पूर्ण अलभ्य साहित्य इतने स्वल्प मूल्य में अन्यत्र नहीं मिल सकता।

(१) मैं क्या हूं ?	|=)
(२) सूर्य चिकित्सा विज्ञान	|=)
(३) प्राण चिकित्सा विज्ञान	|=)
(४) पर काया प्रवेश	|=)
(५) स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या	|=)
(६) मानवीय विद्युत के चमत्कार	|=)
(७) स्वर योग से दिव्य ज्ञान	|=)
(८) भोग में योग	|=)
(९) बुद्धि बढ़ाने के उपाय	|=)
(१०) धनवान बनने के गुप्त रहस्य	|=)
(११) पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि	|=)
(१२) वशीकरण की सच्ची सिद्धि	|=)
(१३) मरने के बाद हमारा क्या होता है ?	|=)
(१४) जीव जन्तुओं की बोली समझना	|=)
(१५) ईश्वर कौन है ? कहाँ है ? कैसा है ?	|=)
(१६) क्या धर्म ? क्या अधर्म ?	|=)
(१७) गहना कर्मणोगतिः	|=)
(१८) जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश	|=)
(१९) पंचाध्यायी	||-)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यवहारिक जीवन की आध्यात्म शिक्षा।

आध्यात्मिकता, आनन्द मय जीवन बिताने की कला है। यदि आप इसी जीवन में स्वर्ग का प्रत्यक्ष आनन्द भोगने की इच्छा करते हैं तो निश्चिय समझिए आप उसमें सफल हो सकते हैं। कैसे ? इस रहस्य को जानने के लिए इन पुस्तकों को पढ़िए। जीवन की व्यवहारिक सफलता के गुप्त मन्त्र इन पुस्तकों में मिलेंगे।

(२०) शक्ति संचय के पथ पर ।=)
(२१) आत्म गौरव की साधना ।=)
(२२) प्रतिष्ठा का उच्च सोपान ।=)
(२३) मित्र भाव बढ़ाने की कला ।=)
(२४) आन्तरिक उल्लास का विकाश ।=)
(२५) आगे बढ़ने की तैयारी ।=)
(२६) आध्यात्म धर्म का अवलम्बन ।=)
(२७) ब्रह्म विद्या का रहस्योद्‌घाटन ।=)

कमीशन देना कतई बन्द है। इसलिए इसके लिए लिखा पढ़ी करना बिलकुल व्यर्थ है। हां, आठ या इससे अधिक पुस्तकें लेने पर डाक खर्च हम अपना लगा देते हैं। आठ से कम पुस्तकें लेने पर डाक खर्च ग्राहक के जिम्मे है।

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय, मथुरा।

मुद्रक- पं० हरचरन लाल शर्मा, पुष्पराज प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri